जाकी है ॥ नहीं ज्यहि ध्यानमुनि पाये। स्वई भरिअङ्कनृपलाये॥

दो० ॥ जन्म समय भो सीयके उत्सव आनँद जौन। कहि न सकैं भगवंत सो शेष शारदा तौन ॥ निगमहू नेति करिगाई ॥ ४ ॥

दिनप्रति अधिक मोदपुर छायो। शुक्ल चतुर्दशि रविदिन आयो॥
कीन्ह छठी भूपति युतप्रीती। जस कछु लोक वेद शुभरीती॥
तृतिया ज्येष्ठकृष्ण गुरुवारा। कीन्ह बारहौं मुदित भुवारा॥
लोक वेद विधि करि अनुरागे। गनि गुरु नाम धरन तव लागे॥
भूमि भयेते भुजा कहाई। सीता वेदं प्रबन्ध अहाई॥
पितु यश हेत जानकी नामा। अरु मैथिलि सम्बन्धिक ग्रामा॥
नामकरण यहिविधि गुरु कीन्हा। पुनि आशीश भांति बहुदीन्हा॥
सुनि नृपरानि परम सुखमाना। द्विजन बोलि दीन्ह्यों बहुदाना॥

दो० दिनादिन कन्या बढ़तइमि शुक्लपक्ष ज्यों चन्द।
देखि देखि पितु मातुमन लहत परमआनन्द॥

नारद मुनि आये यकबारा। करि प्रणाम लै भवन भुवारा॥
तुरत सुतान्नृप आनि देखाई। देखि रूप हरषे मुनिराई॥
बोले मुनि सुनु भूपति बैना। तव कन्यका सकल गुणऐना॥
जन रंजन भंजन भवभारा। आदिशक्ति लीन्हेउ अवतारा॥
परब्रह्म त्रिभुवन पति रामा। यहि कहँ बर मिलिहैं सुखधामा॥
औरहु लक्षण अमित अनूपा। कहिपुनि गमनकीन्ह मुनिभूपा॥
सुनि मुनि के बर बचन पुनीता। धरिलीन्ही उर अन्तर सीता॥
कछुदिन गये सुनैना रानी। जन्मी अपरसुता सुखदानी॥

दो० नामउर्मिला तासुकर अति सुंदरि गुणधाम।
बहुरि उभय जन्मत भई सुता कुशध्वजबाम॥
नाममांडवी जेठि जो श्रुतिकीरति लघुजानि।

रूप शील गुणधामचहुँ प्रकटीं नृपगृह आनि॥

हरिपदछन्द॥ और अमित दासी तिनकेरी आनि जन्म तहँ लीन्ही। मन बच कर्म्म बालपनही ते चितसेवन महँ दीन्ही॥ ऋधि सिधि आदि बधूदेवनकी निमि बंशिन घरआई। धरिधरि सुन्दररूप जनकपुर भईं प्रकट समुदाई॥ खेलहिं एकसंग सादर सब करहिं चरित सुखदाई। बोलनि हँसनि देखि सुनि सानँद मातु पिता बलिजाई॥ जासुचरण सेवत निशिबासर उमा रमा ब्रह्मानी। आदिशक्ति छबिधाम जनकपुर भईं प्रकट स्वइआनी॥ जनकराज महराज भाग्यबड़ि को कहि पारहिपायो। अण्ड अनेक अमल जाको यश रह्यो छाइ सबठायो॥ यहिप्रकार सियजन्मि भूपगृह करत चरित भौसेतू। अब सुनिये चितलाय कहौं शुभ सीयस्वयम्बर हेतू॥ सवैया॥ एकसमय शिवशंकरको मिथिलाधिप कीन तपोव्रत भारी। आयकह्यो शिव माँगहु सो बर जो मनमें अभिलाष तुम्हारी॥ कै सुप्रणाम कह्यो नृप मोकहँ देहु यहै बर एक पुरारी। सन्ततआपु धरें ज्यहि ध्यान स्वई प्रभु हौं भरिनैन निहारी॥ तौ निज दीनशरासन शम्भु कह्यो नृपसों यहिपूजहु जाई। याहियते ममनाथ मिली भगवन्त तुम्हें दिनमें कछुआई॥ मानि नरेश महेश कि बानि लगे धनु पूजन नेह लगाई। आठहु याम यहै मनकाम कबैप्रभु देखिय नैन अघाई॥ कुण्डलिया॥ आई यकदिन आपुनहिं धनुथल लीं-पनरानि। बोलिंपठाई जानकिहि तुरत तहाँ तिनआनि॥ तुरत तहाँ तिनआनि बामकर धनुलय लीन्ह्यों। दक्षिण कर मलझारि रुचिर चौकादै दीन्ह्यों॥ धरि त्यहिठाम धनुषपुनि भवन सिधाई। पूजन हित नृपजाय दीख चिंता मनआई॥

दो० भवनआइ पुनि हालसब रानिहि पूछेउ राउ।

सुनि रहिगे चुपसाधिकै गुनिमन सुता प्रभाउ ॥
शोच विवश पौढ़े नृपजाई। स्वप्ने शिव असदीन बताई॥
धनुप्रण गहो सुतावर हेता। उठिप्रभात नृप हरष समेता॥
कीन्ह प्रतिज्ञा शिवधनु जोई। खण्डनकरी वरी सिय सोई॥
रंगअवनि रचि धनुष धराई। देश देश नृप निवति बुलाई॥
बाणासुर रावण बलराशी। बीर सुधन्वा भूपति काशी॥
इनसम अमित भूप बलवाना। रङ्गभूमि बैठे करि माना॥
तबहिं भूप बंदीजन बोली। कहेउकहहु सबसन प्रणखोली॥
ते उठाइ द्वउभुजा विशाला। बोले सुनहु सकल महिपाला॥

सवैया॥ शङ्करचाप कठोर गरूअति जानतको जगमेंनहिंजाको। राजसमाजम शूर शिरोमणि जो करि हैं कइ भंजनयाको ॥ होय चहै स्वइ रङ्क कि राउ विचार बिना बरि है सिय ताको। कान लगाय सुनो सब भूपति सत्य कहौं प्रणदै करि हाँको ॥

दो॰ बंदीजनके बचन सुनि नृप सब सहित हुलास।
उठि उठि आसनते तबहिं आये शिव धनुपास॥
रावण बाणासुर सुभट जानत सब संसार।
करन लगे बकवाद तब दोऊ आप मँझार॥

(रावण) स॰॥ देहु हमैं इत शङ्करचाप कितै कहु राजकुमारि बतावो। जाहि उठाइ गये नृपहारि सुकै द्वय तीनिक टूक बहावों॥ हौं निज बीस भुजानबलै यहि राजसमाजहि आजु देखावों। कारिखदै मुख राजनके लै राजकुमारिहि लंङ्क सिधावों॥

(बाण) स॰॥ रेदशकन्ध महामतिमन्द बिसौ द्दगअन्ध निलज्ज सदायो। जानतहै न प्रभाव शिवै जिन पानकियो विष कीरति छायो॥ नाश कियो त्रिपुरासुर जो द्दग तीसर खोलिकै

मैन जरायो। तासु शरासन तोरनको खरको अस लै मुख तू खल आयो॥ तजि बाद बिवादहि बादि सबै हठछांड़ि पराक्रम आनि करै। अब आजु सुराज समाजनमें जनि कादरता निज चित्तधरै॥ शिवचाप सुमेरहुते गरुहै परसै जब पाणि तु जानिपरै। दश मुण्डन ताहि बिखण्डनकै सुख पाय सुलै यश जायघरै॥

(रा०) दो० रे बन्दीजन कुटिलतैं सुने न बात हमारि॥
राजसभामें क्यों नहीं लावत राजकुमारि॥

(बाण) दो० हे रावण जो बल तुम्हें तौ किन तोरौ चाप।
बिनु तोरे किमि पाइहौ राजपुत्रि को आप॥

(रावण) स०॥ जे भुजदण्ड प्रचण्डन सों बरिबण्डन शत्रु अखंड दहाहैं। खण्डि अखण्डित पाश जलेश सुरेश दल्यो पवि पुष्ट महा है॥ मूलक सो शिवशैल उखारि जुख्यालहि काल कराल गहा है। सोइ बने मम बीस भुजा यह तुच्छ पिनाक पुरानकहाहै॥

(बाण) स०॥ काह प्रशंसत आपहितैं मुख भूरि दिये करि जाहि बिधातैं। ताहि नहीं कछु बात अहै जु बनाय कहै बहुभांतिनबातैं॥ बातनते नहिं काजसरै यह नाहक मूढ़ लड़ावत घातैं। होइजु बीसभुजान बलै कस आय शरासन तोरत नातैं॥

(रा०) दो० अहो बाण बादत कहा तेरे भुज हतसार।
हैन सकत इनते कछू लीन्हें केवल भार॥

(बाण) दो० हे रावण मम भुजनको जानसि तैंन प्रभाव।
थोरो सो कछु कहतहौं नहिं करि बहुतबढ़ाव॥

कवित्त॥ हौं निज पिताके पद पूजन को जात जब पावन सुभाय पाप पुञ्जन प्रनासिया। देखि तब रावण फिरत फेरि भावनै सु सातहू रसातलौंके जावतै बिलासिया॥ लैकै भुजदण्डन

अखण्डन पै आपने सुकरौं क्षिति मण्डल को छत्रक प्रभासिया। भाग्यवन्त जानै कौन केतिकधौं बार शेश शीशन पै दीन जाय भुजन उसासिया॥

(रावण) सवैया॥ बाण बखानत काह बृथामुख बाहुनके बल पुञ्ज प्रतापहि। होतेहु बीर प्रमाणिक जो बल पूरणहोत भुजानमें आपहि॥ तौ किन लेतेहु भूतलमें बर बाहुँनके बल आपने बापहि। जो करतूति सुकै जगमें यश काहेन लेतिहु जीति कलापहि॥

(बाण) दो० पितुआनौं काकेभवन सकललोकदियदान।
परब्रह्म रस लीन सो जीति दान मैदान॥

कुण्ड०॥ सार्‍यो सब सुरकाज ज्यहि मार्‍यो खल बलवान। मधु मुरकैटभ से सुभट जिन जीत्यो मैदान॥ जिन जीत्यो मैदान भुवन त्रैपालन करता। पूरण ब्रह्मसमान रचत सोई संहरता॥ संहरता महि भार नेति जेहि वेद पुकार्‍यो। मांगन हित खइनाथ हाथ बलिपाहिं पसार्‍यो॥

(रा०) दो० हे बाणासुर मम त्वया यह बकबाद कलाप।
बूभिय नहिं खुलिजाइगो शिवै चापतेआप॥

(बाण) क०॥ औरहीते और कछु कीन्हीं करतार ज्यहि जानी नहिंजातगति अतिशै प्रबलहै। आए इत शूरन मिलनकाज आज हम गयो मिलि कहां आनि रावण अबलहै॥ बादि बकबाद गयो नाहक.रे भाइ यह भूलिनासुनाए गारि प्रणराउ फलहैं। भाग्यवन्त कीरति सुहेतहौं दलब चाप करै नृप.आप पुत्रि.राजही अचलहै॥

(रावण) स०॥ रावणनाम बली भट आख्य सकै जग सेंकि हमें कछु कोरे। औरनकी न बखान करौं.यमराजहु युद्धजुरे कर जोरे॥ नेकु नहीं बलवान तुम्हैं बतुबात कहा मुख सम्मुख मोरे.।

तौधृग मोहिं पुकारि कहौं घरजाउँ जु आजु बिना धनुतोरे ॥

दो० राजसभा तिनुका सरिस मय करि लेखौं बान।
भूपसुताको देखि पुनि देखौं धनुषपुरान॥

(बाण) सवैया॥रावण बातबनावतहै तु उठावत क्योंनहिं शंभु शरासन। आदिहिं बादिकरै वचवादि सुत्यागत क्यों बकबादिन आसन॥ रे जड़ जानतहै कि नहीं जगजाहिर तै सुनिजै मदनाशन। पूरण क्यों मंनभावतहोइ न जावत पूरकरैं नृपशाशन॥

(रावण) भुजंगप्रयात छन्द ॥ रहे क्या वृथा काज वे लाज माखी। न आवे तुझे बात रे बाणभाखी॥
(बाण)बड़ेहैजु वातूलतैं बाहुबीहा। कहै जो रुचै तोहिंसो रे अलीहा॥
(रावण) करैगो तु क्या मोररे भूरिबाहू करैंगे हमैंसेहिसीताविवाहू॥
(बाण) जु साहसबाँहूँ करीतौ दशा रे। करौंगो स्वई आजु हौं राकसारे॥

(रावण) सवैया ॥ भृंग सों वासुकि भूत गणेश सुगंगमनों मकरन्दसुहैना। धूरिसो भूरि उड़ै पटगौरि मृणाल सो बाहुँ भयो बलऐना॥ आयुधसर्व समेत सुताहि उठायकिये गति पन्नसचैना। जानत बानहै बातसबै बर बाहुबलै ममजानततैना॥

दो० बाणपिनाक पुरान में पलमें लेब चढ़ाय।
तुमहूँ तौ करि बलकछू देखौ याहि उठाय॥

(बाण)मेरे गुरुको धनु यह रावन। सीता मेरी मातु सुहावन॥
इहूँ भाँति असमंजस जानी। गवनेउ बाणभवन सुखमानी॥

(रा०)दो० हौं बिनुलीन्हे सीयकहुँ तौलगि टरौं न आन।
जौलगि सुनौं न दासको आरत शब्दसुकान॥
येते महँ कहुँ राकसहि हत्यो वीर कउबान।

आरतशब्द सु तासु सुनि रावण कीन पयान ॥

सवैया ॥ सिंह समान पस्यो लखि एकन एकनको दरस्यो जिमि व्याला । एकन व्याघ्र लख्यो कर छूवत एकन लाग यथा नल ज्वाला ॥ शम्भु समान लख्यो धनुबान गये ढिग भोकइ अंध भुवाला ।बातसबै जियजानि सबान किये उठिगौन-गवैं दशभाला ॥

दो॰ सबलभूप यहिबिधि सकल गे मन समुझि प्रताप ।
अबलभूप बलकै थके टरेउ न शंकर चाप ॥
बरियाई माँग्यो तबहिं व्याह सुधन्वा राय ।
भूपन दीन्ह्यो कोपिदल सजिपुर घेस्यो आय ॥

छप्पै ॥ तासों जनक नरेश समर बहुभांतिन कीन्हा । जब त्यहिं चह्यो सकोप आगि पुर चहुँदिशि दीन्हा ॥ तब सुमिरेउ मिथिलेश शंभु निज पठै सहाई । परदल सहित सँहारि लीन त्यहि देशबसाई ॥ है सुथिर बहुरि मिथिलेश नृप धनुषयज्ञ कर साजकिय । बदि प्रथम दिवस कातिक नृपन लिखि लिखि पत्र अपार दिय ॥

दो॰ पत्रपाय सजि साज बहु निज निज सकल नरेश ।
चले परम आनंद मन पावनपुर मिथिलेश ॥

इतिश्रीमन्मयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रंथश्री जानकीजन्मोत्सववर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

राम सीयकर जन्म सुहावा । निजमति सरिस कछुकमैंगावा ॥
मुनि आगमन कहौं अवगाई । सादर सुनहु सुअंन चितलाई ॥
विश्वामित्र गाधि सुतज्ञानी । सुरसरि तट बन थल भलजानी ॥
मुनिगण सहित करहिं तहँ बासा । भये दुखित अति दनुजनत्रासा ॥
लागहिं करन योग मख जबहीं । आय बिध्वंस करहिं खल तबहीं ॥
तब मुनि हृदय मंत्र अस आना । कोशलपुर प्रकटे भगवाना ॥

लावहु जाय माँगि मैं तिनका। ते द्वउबंधु शमन करि इनका॥
करिहैं मम मखकै रखवारी। अस बिचारि मुनि तुरत सिधारी॥
दो० कोशलपुर प्राची दिशा सोरह योजन पाहिं।
विश्वामित्र ऋषीश को शुभ आश्रमहै ताहिं॥
क्वार कृष्ण षष्ठी दिवस मुनिवर कीन्ह पयान।
नौमीदिन आये अवध करि सरयू अस्नान॥
द्वारपाल यक भेजिकै दीन्ह्यो खबरि जनाय।
सुनि दशरथ सानंद उठि सादर भेट्यो आय॥

त्रोटकछन्द॥ करि दण्डप्रणाम ऋषीश्वरको। लय सादर भूप चले घरको॥ शुभ आसन बैठन को सुदिये। पुनि पूजन षोडश भाँति किये॥ जुतरानि विनय बहुभाँति कियो। सुत चारिहुलै पग मेलि दियो॥ छबि देखि मुनीश प्रसन्न हिये। पुनि बारहिं बार अशीश दिये॥

दो० तब करजोरि महीपकह मुनि आयो क्यहि काज।
कहउ करत सो नाथ मैं देर न लैहउँ आज॥

सवैया॥ देव धरा द्विज गो मुनि रक्षक सत्यब्रती मम बैनसुनीजे। निश्चर घोर सतावत मोहिं करै मख आश्रम देत नहींजे॥ सो दुखमानि भयों तव याचक धर्म बिचारि भलो यशलीजे। सानुजरामहिं देहु महीपति मारहिं दुष्टन मो दुखछीजे॥

दो० गाधिसुवनके वचन इमि सुनि नृपगये सुखाय।
जैसे परसत तुहिनके कमलजाय मुरझाय॥
पुनि धरिधीर महीप कह माँग्यो मुनि न विचारि।
राम लषण किमि देउँ द्वउ जीवनप्राण हमारि॥

सवैया॥ माँगहु धेनु महीधन कोष सरोषदियो सब शंकन

यामै। धामहु बामदियो बिनखेद करौ इनकारण रंचकतामै॥ प्राण समान प्रियाकलुदेह न देउ स्वऊ मुनि एक छनामै। राउर काज दियो सबआज बनै यकदेत न केवल रामै॥ हे मुनिराज बिंचारकरौ सुकुमार कहाँ सुतहैं ममबारे। राकस घोर कठोर.कहाँ गिरिसों बलवान महाभयकारे॥ जे धनुबानगहै नहिं जानत बालसखा सँग खेलनहारे। ते लरि हैं किमि संयुगमें मुनि माँग्यहु तौ नहिं योग बिचारे॥ किरीटछन्द॥ रामसनेहमई मुनि बानि कह्यो ऋषिराज सुनो महिपालक। चातुर.वीर बड़े रणधीर न जानिय आपु इन्हैं करि बालक॥ रक्षकहैं सुर साधुनके अरु घोर तमीचर बृन्दन घालक। मानिसही ममबानि महीपति द्यौ चलिमेटहि मो दुखजालक॥

दो० तब बशिष्ठ बहुभाँति सों समुझाये नरनाह।
जग मंगलके काज सुत दीजे सहित उछाह॥

कुण्डलिका॥ दीजे नृप मुनिराज कहँ पुत्र परम सुखमानि। निश्चरदलि मखराखिकै बेगि मिलहिंगे आनि॥ बेगि मिलहिंगे आनि लाभ इनको अतिहोई। होई जगयश आपु बिलँब कीजे नहिं कोई॥ कोई भाँति न आन गुनियमनमें सुनिलीजे। लीजे आयसुमानि मुनिहिं सादर सुतदीजे॥

दो० गुरुवशिष्ठके वचनसुनि नृप द्वउतनै बुलाय।
दीन सौंपि मुनिराज कहँ कुल सबरीति सिखाय॥

सवैया॥ मानि पिता गुरु मातु समान सदा मुनिसेवनमें चितलायो। बैन कठोरकह्यो न कभू जन याचक दानदिह्यो मनभायो॥ भूलिलख्यो परनारि दिशा नहिं सम्मुख शत्रुन पीठि.तकायो॥ कै मुनि कौशिककाज सबै सुत आतुर लौटि घरै निजआयो॥ छप्पै॥ पितुआयसु धरि शीश बेगि सानुज रघुराई। जननि जनक शिर-

नाय मुदितमन आशिषपाई ॥ लीन्हे कर धनुबान कसे सुन्दर कटि भाथा। श्याम गौर द्वउबन्धु निरखि लाजत रतिनाथा ॥ मुनिराज परम आनन्दमन जपतपकर फल जनुमिल्यो। बहुभाँति नृपहि आशीषदय राम लषण सँगलैचल्यो ॥

दो० चलतसमय हनुमानको दीन छोरि रघुराय।
कह्यो कछुक दिनमें तुम्हैं मिलबै बनमें आय ॥

कवित्त ॥ जात मग ताड़का करालरूप ब्योममाहिं आवत बिलोकि मुनि रामही बतायो है। देखिताहि राघवेश कौशिकै कह्यो कि नाथ कामिनी बिहीन नाह नीमशवगायो है ॥ ताहूपै न सामुहे समर कौनभाँति याहि मारिये न रीति वंश क्षत्रियो अहायो है ॥ होय जैस आयसु कृपालको करौं मैं शीघ्र राउरे के काजहेत तात मो पठायो है ॥

दो० रामचन्द्रके वचनसुनि कह मुनि कौशिक येह।
पातकमय यह राकसी मारिय बिनु संदेह ॥
सुनत राम एकै विशिख तासुप्राण हरिलीन।
दीनजानि त्यहि दीनहित तुरतहि निजपददीन ॥
कन्या यक्षसुकेत यह हती रूप आगार।
घटज शाप कुरूपभइ कीन्हे हरि उद्धार ॥
प्रभुप्रभाव लखिकै ऋषय हृदय हर्ष अतिकीन।
विद्यानिधि भगवान कहँ विद्या बहुविधि दीन ॥

सवैया ॥ लाग न प्यास क्षुधा ज्यहिते न घटै बल तेज तनोपर छावै। सुन्दर मङ्गलमै मगदायक त्रासहु नींद समीप न आवै ॥ बिघ्न निवारण शत्रु बिदारण मंत्र अनेकन जे गनिजावै। आयुध सिद्धि समर्पि सबै निज आश्रमलै प्रभु को सहचावै ॥

दो॰ षोडश विधि पूजन किये दिये मूल फलखान।
प्रातसमय शुभ जानिकै बोले श्रीभगवान॥

सवैया॥ निर्भय यज्ञकरौ तुम जाय सजे धनुबान खड़े हम आहैं। आयसुपाय अरम्भ किये मख देखत धूम, निशाचर नाहैं॥ लैदल धायचल्यो जबहीं प्रभु मारयोबान बिनाफरकाहै। लागतही शतयोजन पार पयोनिधि जायमरीच गिराहै॥ रामबहोरि सुधारि शरासन जारयो पावकबान सुबाहै। लक्ष्मण सेन संहार किये सब राकस एकन भागि बचाहै॥ शोक गये मुनि वृन्दनके मख पूरण भे ऋषि मोद लहाहै। देव अनन्दभरे भगवंत करैं नभजै जयकार महाहै॥

दो॰ पुनि मुनि बोले राम सों तात जनकपुर माँहि।
अद्भुत यक कौतुक अहै चलहु देखिये ताहि॥

सवैया॥ कीन बिदेह अहै प्रणयों शिव चाप कठोर जुकै दलि डारी। सादर ताहि बरी तनया महिपाल जुरे बहुगे सबहारी॥ टारि सक्योधनु नेकु क्यहू नहिं रावण बाणहि हारि सिधारी। दूरिकरौ चलिकै रघुनायक राजहिं धर्म कुसंकट भारी॥

दो॰ धनुषयज्ञ मुनि जनकपुर रघुकुल कमल पतंग।
राम लषण द्वउ बन्धुबर हरषि चले मुनिसंग॥

छप्पै॥ नराकार यक शिलापरा आगे प्रभुदेखा। पूंछेउ कौशिक पाहिं कह्यौ मुनि हाल बिशेखा॥ गौतम ऋषिकी नारि परम सुंदरि गुणखानी। ऋषि तनुधरि बिबुधेश बंचि त्यंहि सों रति ठानी॥ ऋषि आय देखिकरि कोप तब दीन शाप सुरराज कहँ। भगएक हेत आयो इहाँ होयँ सहस तवदेह महँ॥ घनाक्षरी॥ देखि ऋषि याहि फेरि कोपिकै कुशापदीन पाहन स्वरूप ह्वैकै तोहू दुःख भोगु जाय। कीन्हीं जब अस्तुति अपारमुनि दीनभाषि रामपद धूरि-

लागि जाई पाप तू नशाय॥ इन्दहू अपारकीन अस्तुती कहा कि जाउ चाप धुनि सुनि अक्षहैहै कछू कालपाय। सोईहै अहल्या यह चाहती चरणधूरि कीजिये कृपा स्वराम दीजिये चरण छाय॥

दो० सुनत राम त्यहि शीशनिज दीन्ह्यों चरण छुवाय।
दिव्यरूप ह्वै करनलगि अस्तुति अति हरषाय॥

मात्रात्रिभंगी छन्द॥ जैजै रघुनन्दन असुर निकन्दन हर अघ बृंदन भारमही। यश अमल अनन्ता तव भगवन्ता कह श्रुति संता पारनही॥ सब गुण गण भारा रूप उदारा प्रभु सुख सारा आप अहै। ज्यहि दरश प्रभावा मैं गतिपावा सकल नशावा पाप अहै॥ मैं जड़ मतिपर्मा पूरुब जन्मा अमित कुकर्म्मा करतभई। करि कृपा कृपाला पदरज भाला धरि अघजाला दूरिकई॥ किमि विनय सुनाऊँ पद शिरनाऊँ यह बरपाऊँ रामप्रभू। तव चरणन माहीं प्रीति सदाहीं रह न छुटाहीं नाथ कभू॥ भावत मन पाई बर सुखदाई पद शिरनाई हरषभरी। जैजै बहुभाखी प्रभुउरराखी निज पति लोकै गमनकरी॥ सुर देखत हरषे प्रभुपर बरषे सुमन जैति जय व्योम कही। यह कीरति पावन परम सुहावन विशद तिहूंपुर छायरही॥

स०॥ बिनु कारण राम कृपालसदा शरणागत पालक बानिहिये। अपराध अपार करी ऋषिनारि कृपाकरिकै गति ताहिदिये॥ असजानि नितै भगवन्त भजौ करुणाकरको दृढ़नेम लिये। नतु जाइहि जन्म अकार्थ बृथाफल कौनकहौ जगमाहिं जिये॥

पुनि सानँद सानुज रघुनाथा। गमन कीन्ह आगे मुनिसाथा॥
पहुँचे जाइ देव सरितीरा। सानुज करि प्रणाम रघुबीरा॥
पुनि मुनिसन पूछेउ रघुराई। क्यहिविधि नाथ गंग महिआई॥
अरु उत्पति क्यहिविधि भै गंगा। कहहुनाथ सो सकल प्रसंगा॥

सुनि मुनिकह तव कुलमें ताता। भयो सगर नृप जग विख्याता॥
केशि सुमति युग तिय तिनरहेऊ। बिनसुत दुखित भूप मन भयऊ॥
त्रियन सहित नृप कानन जाई। सुतहित तपकीन्हे अधिकाई॥
भृगु तबआइ देन बर लाग्यो। एक पुत्र केशी तिय मांग्यो॥
दो० सुमतिकह्यो प्रभुदीजिये म्वहिंसुत साठिहजार।
एवमस्तु कहि भृगुगये आयउ नृप आगार॥
केशि सुवन असमंजस जयऊ। अंशुमान तिनके सुतभयऊ॥
असमंजसहि शिशुन बध दोषा। घर बाहिर किय नृप सहरोषा॥
साठिसहस्र सुमति सुतंजाई। ते रणधीर बीर सब भाई॥
भूपति सगर यज्ञ जब कीन्हा। छाड़्यउँ बाजि इन्द्र हरिलीन्हा॥
लै पाताल कपिलमुनि नेरे। बाँध्यो नहिं पायो नृपहेरे॥
तब पठये सुत साठिहजारा। तिन ढूंढ़्यो सबजगत मँझारा॥
नहिंपाये महिखोदन लागे। पहुँचे जाइ कपिलके आगे॥
लखिहय मुनिहिं बचनकटु कहेऊ। खोलत पलक भस्म सबभयऊ॥
दो० अंशुमान कहँ बोलि पुनि कह्योभूप समुझाय।
सुत नहिंआये जाय तुम लावहु खोज लगाय॥
गीतिकाछन्द॥ सुनि तातके इमिबैन सादर अंशुमान सिधा-
यऊ। मगगरुड़ मिलि ज्यहि भाँति भे सुत नाश हाल बतायऊ॥
सह गरुड़मुनि पहँजाय किय बहुबिनय हय तौ पायऊ। खगनाथ
पुनि अँशुमान सों कहि बचन ऐस सुनायऊ॥
दो० गंगा जो आवहिं अवनि तरैं पितृ तव आसु।
अंशुमान सों भाषि इमि गे खगपति हरि पास॥
मल्लिका छन्द॥ अंशुमान भौनआइ। हाल भूपको सुनाइ॥
अश्व पाय बोलिलीन। विप्रवृन्द यज्ञकीन॥ राज अंशुमान दीन।

गौन काननापुकीन ॥ तोमरछन्द ॥ बहुभांति स्वातपकीन। पुनि त्यागिते तनुदीन॥ अंशुमान पुत्रदलीप। तिन्ह राजदै सुमहीप॥ बन गौन आपहुकीन॥ तपकै सुत्यागि तनुदीन॥

भागीरथ दलीपके भयऊ। जिनको सुयश लोकतिहुँछयऊ॥
सुतहिं राजदै नृप बन गयऊ। करितप कठिन तहां त्यउमरयऊ॥
पुत्र भगीरथ के काकुस्था। भये जबहिं सब भांति समर्था॥
तिनहिं राज दै गे नृप कानन। कीन अमित तप लखिचतुरानन॥
आइ कह्यो मांगहु बरराई। जोरि पाणि कह नृप शिरनाई॥
नाथ कृपाकरि दीजे याही। आवंहिं गंग अवनिके माहीं॥
सुनि अजकहा शिवहितुमध्यावो। तिनते मांगि ऐस बरलावो॥
गंगहि महि हम छोड़ी जबहीं। राखहिं रोंकि जटनमें तबहीं॥

दो० तब भागीरथ शम्भुको बहु प्रकार तप कीन।
राखब सुरसरि रोंकि हम ह्वै प्रसन्न बरदीन॥

पुनिअस्तुति बिधिसों नृपकीन्ही। तब सुरसरिहिछाँड़ि अजदीन्ही॥
हाहाकार करत सोधाई। दीन शम्भु निज जटा बढ़ाई॥
त्यहि महँ सुरसरि धार समानी। वर्ष एक तहँ रही भुलानी॥
भागिरथ बहु बिनती कीन्हा। गहिकर जटा गारि शिव दीन्हा॥
तब तहँ भई धार त्रैतामें। कारण सुनहु जवनहै यामें॥
शंकर गान कीन्ह यकबारा। मालकोश वर राग उचारा॥
सुनि सुर सब गलि जल ह्वै गयऊ। पुनिबिधिरचेकछुकजलबच्यऊ॥
ताहि कमंडल में धरिलयऊ। तासु अंशते धार जु भयऊ॥

दो० स्वर्ग लोक कहँ सो गई धार परम अभिराम।
मंदाकिनि त्यहि नांमहै दायक सब मन काम॥

नाम प्रचेता ऋषि यकबारा। करत रहे तप बिपिन मँझारा॥

तन महँ कछुक पसेऊ बहेऊ। त्यहि क्षणविधि बरदेन जु गयऊ॥
सुकृती लखि ऋषिकेर पसीना। पोंछि कमंडल में धरि लीन्हा॥
तासु अंश प्रकटी जो धारा। जात सुभई पताल मँझारा॥
परभावती नाम त्यहि अहई। अमित प्रभाव पार को लहई॥
बलिहि छलन बामन जब गयऊ। तीनि पैग महि माँगत भयऊ॥
नापत तनु यहि भाँति बढ़ाये। पग पताल यक स्वर्ग लगाये॥
ब्रह्मलोक पहुँच्यो पग जबहीं। चीन्हिधोइ अजलीन्हेउ तबहीं॥

दो० धरयो कमंडल माहिं लै तासु अंशकी धार।
रही भगीरथ हेतमहि गंगा नाम उदार॥
भागिरथ सँग सो चली करत लोक निस्तार।
गंगा सागर में मिली नृपपितृन करिपार॥
यहिप्रकार गंगा अवनि आई जग विख्यात।
महिमा अमित अनूपहै जो नहिं कहे सिरात॥

कवित्त॥ पावन करणि लोक जीवन हरणि शोक दोष दुख दारिद करत अघ भंगाहै। अमित प्रभाव जाको पावत न पार वेद पीवत पुनीत बारि होत शुद्ध अंगाहै॥ ज्ञान प्रकटावै तीनि तापको हटावै द्वार मुक्तिके अँटावै बेगि दिव्य जातरङ्गाहै। घोर भवतारिबेक यमगण मारिबेक बीगरी सुधारिबेक भूतलेक गंगाहै॥ दर्श जासु जन्म शतमज्जत विशतबारि पीवत सहस जन्म संचिताघंजावई। ऐसो ब्रह्म बारि जाहि शीशपै पुरारि धारि वेद औ पुराण जाकी नित्य कीर्त्ति गावई॥ दानमख योग जप नेम ब्रत पुण्यभूरि गंग असनान सम तुल्य एकनावई। भाग्यवंत प्रकट प्रभाव लोक तीनि माहिं सेवत सुभाय जाको मुक्तिजीव पावई॥ जैसे बाज लावाको झपटि एक धावालेत कंदनके वृन्द यथा मारुत उड़ावई। जैसे तूल

राशिकरै दावानल जारि छार निविड निशांध यथा भानुभा मिटा-वई ॥ जैसे लघु व्यालन शिखंडि धाय खाय जात परत तुषार यथा कंज सूखि जावई। तैसे भगवंत धार गंगाजूकी लोक माहिं पापन कि राशि एकक्षण में नशावई ॥

दो० सुरसरि कथा बिचित्र अति सुनि हरषे भगवान।
सहित ऋषिन मज्जन किये विप्रन दिय बहुदान ॥
पुनि सानुज मुनि संग प्रभु मिथिलापुर कियगौन।
आय दीख शोभा परम कहत बनै नहिं तौन ॥

कवित्त ॥ बापी कूप सरित तड़ाग सोहैं नानाभाँति बनज बि-काश जामें रङ्ग रङ्ग ह्वै रहे। पुरट बँधान मणि जटित बिचित्र बारि पूरण सुधासों रसमत्त भृंग लैरहे ॥ डोलत सुगन्ध मंद शीतल पु-नीत बायु वृक्षन विहंग जाल शोर घोरकैरहे। कैरहे सनान ग्राम नारिनर भाग्यवंत आनँद अपार ठौर ठौरपै सुखैरहे ॥ चारोंओर बाग बन बाटिका बिराजै भूरि फूल फल भारनसों डारे भूमि नैरही। वृक्षन लतानके बितानसे तने हैं पुंज तासुमध्य पक्षिन कि झीनीशब्द ह्वैरही ॥ हाटबाट चौहट नगर द्वार द्वारपर आनँद अपारहोत भारी छबि छैरही। भाग्यवन्त कौन भांति शोभसो बखानिपाव देखतहि जासु अमरावती लजैरही ॥

दो० पुर बाहिर जहँ तहँ बिपिन सरिसर कूप समीप।
निज निज लीन्हे सेनसँग उतरे बिपुल महीप ॥

सवैया ॥ कौशिक देखि अनूप तहां यकदायक मोदभली अम-राई। पावन भूमि समीप नदीसर फूलसवृक्षलता नवछाई ॥ मंदिर हू बहु देवनके नहिं मज्जन पूजनमें कठिनाई। है सब भांति सुपास इहां मनभावत मोरहियें रघुराई ॥

दो० भलेहिनाथ कहि मुदितमन तहँ मुनिवृन्द समेत।
उतरे भलथल जानिकै सानुज कृपानिकेत॥
मिथिलापति मुनि आगमन सुनिलै संग समाज।
मिलन हेतु आये तहां उतरे जहँ ऋषिराज॥

सवैया॥ कीन्ह प्रणाम मुनीशहि भूपति दीन्ह अशीश ऋषीश्वरज्ञाता। लीन्ह बिठाय समीप नृपै पुनि सादर पूछतभे कुशलाता॥ बाग विलोकनगेजुरहैं त्यहि औसर आवतभे द्वउ भ्राता। श्यामल गौर किशोर उभै क्यहि भांति कहौं छविसो सुखदाता॥ भूप विदेह विदेह भये सुविशेषि विलोकत राम निकाई। प्रेम भरे युगनैन चकोर निहारिरहे मुखचन्द्र लुभाई॥ राज समाज सबै वश प्रेम न देहदशा सुधिकेहु रहाई। धीर हृदै धरि कौशिक सों पुनि पूछत भूपति यों शिरनाई॥ नाथ अहैं क्यहिके युग बालक ये गुण धाम सुभाय सुहाये। कै मुनिपुत्र कि राजकुमार कि व्यापक ब्रह्म द्विहै इत आये॥ की धरि काम उभैवपु संग कि भूप क्यहू तपकै फल पाये। मोमन ज्ञान विराग सदारत देखि इन्हें सुख ब्रह्म विहाये॥ हे नृप आपुकहे सबनीक न होहिं अलीक सुबैन तुम्हारे। प्राणिजहांलगि लोकबिषे सबहीक अहैं यइ प्राणनप्यारे॥ कोशलराजकुमार द्वि मोमख रक्षकहै रणरक्षस मारे। नाम सुराम बड़े लघु लच्मण देखन यज्ञ इतै पगुधारे॥

दो० सुनि मुनि वचन विदेह कह नाथ कृपा बड़ि कीन्ह।
मोहिं कृतारथ करन हित आपु इतै पगदीन॥

सवैया॥ राउर तेज प्रताप महा जिन क्षत्रिय ह्वै पदवी द्विज लीन्हें। दूसरि सृष्टि रचै सुलगेरु त्रिशंकुहि स्वर्ग पठै तुम दीन्हें॥ हौ परस्वार्थ सदारत कौशिक राजकुमारन संग सुलीन्हें। दुष्ट म-

राय तराय तिया ऋषि मोपर आय कृपा बड़ि कीन्हें ॥ छप्पै ॥ पुनि सादर नरनाह विनै बहुभांति सुनाई।सहित लषण रघुनाथ मुनिहिं पुरचले लिवाई ॥ दायक सुख सब काल सदनलै तहां टिकाये। करि पूजन बहुभांति पाय आय सु घर आये ॥ पुनि ऋषिन सहित रघुनाथ शुचि अशन पाय विश्रामकरि। सह अनुज मुदित बैठतभये रह्यो दिवस यकयामभरि ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेविश्वामित्रागमनश्रीरामचन्द्रयात्राताडकासुबाहादिवधअहल्याउद्धारजनकपुरआगमनश्रीजनकविश्वामित्रसमागमवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दो० लषण हृदय अति लालसा देखन पुर मिथिलेश।
जानि राम मुनिराज सन बोले वचन सुवेश ॥

सवैया ॥ उत्सवनाथ महा मिथिलापुर शोभ अपार छई सबठाई। है धनुयज्ञ टिके बहुभूप जहाँ तहँ बाजत मोद बधाई ॥ देखन लक्ष्मण चाहतहैं परनाथ सकोच करें न जनाई। पावहुँ मैं भगवन्त जु आयसु लावहुँ साथहि जाय दिखाई ॥ कवित्त ॥ धर्मसेतु पालक सदाहौ रामचन्द्र तुम काहेन कहहु ऐसि रीति कुल स्यावहू। दर्शनाभिलाष तौ विकल पुर नारि नर जायकै देखाय रूप चित्त हरि ल्यावहू ॥ अबला अबलइत आयना सकत आपु देखे बिनुपरी अधमरी तिन्हैं ज्यावहू। प्यासे छवि नैनन चकोरनको भाग्यवन्त चन्द्रमुख सुखमा पियूष रस प्यावहू ॥

दो० मुनि पदपद्म प्रणामकरि रामलषण दोउबन्धु।
हरषि नगर देखन चले रूपराशि गुणसिन्धु ॥

कवित्त ॥ श्यामगौर गातमंजु राजत सुपीतपट सुखमा निधान कामकोटि भा लजाये हैं। सोहत निषंग लंक शायक कोदंड हाथ नाग मणिमाल छवि ऊपमा न पाये हैं ॥ पूर्णचन्द्र आनन प्रकाश

मान भाग्यवन्त चौतनी अनूप भाल तिलक सुहाये हैं। आये ग्राम देखन नगर नरनारि सुनि धाम काम त्यागि सब देखिबेको धाये हैं ॥

दो० देखि सहज सुंदर युगल बन्धु सकल गुणखानि ।
पावहिं सुख पुरजन परम सफल विलोचन मानि ॥
आठौसखि सियकी सुभग निरखि झरोखन जात ।
सहित प्रेमसानंद सब कहहिं परस्पर बात ॥

चारुशीला वचन ॥

दो० सखिइन कोटिन कामकी लीन जीति छवि आहि ।
शोभा सुर नर नाग में सुनियत असि कहुँ नाहि ॥

सवैया ॥ विष्णुहि चारि भुजा सखि हैं चतुराननहू के अहैं मुखचारी । व्याल कपाल विभूति जटाधर आनन पञ्च सदा त्रिपुरारी ॥ और कई असदेव नहीं छविवान इन्हें उपमा जु विचारी । मोहन जो यह रूप निहारि कहौ जग में अस को तनुधारी ॥ लच्मणा वचन ॥ कवित्त ॥ भूप दशरत्थ के कुमार युग यहै सखि कौशिक कि राखि मख दुष्टन सँहारे हैं । गौतम कि नारिवश शापभै उपल ताहि देखिकै चरण धूरि छ्वाय मगतारे हैं ॥ गौरजे लषण नाम तनय सुमित्रा लघु श्याम राम नाम ज्येष्ठ कौशला के बारे हैं । रूपगुण धाम ये द्विबंधु मुनिराज संग चाप मख देखनार्थ इतै पगुधारे हैं ॥ हेमा वचन ॥ सवैया ॥ सुन्दर श्याम स्वरूप अनूपम जात नहीं सुखमांगकही है । मोहनरूप अहै सखि ये चट मोहि रही सिंय देखतही है ॥ जानकि योग यहै वरहै अरु योग इन्हें सिय क्या दुलही है । जो तकिहैं मिथिलेश इन्हैं करि हैं तजिकै प्रण व्याहु सही है ॥ क्षेमावचन ॥ सवैया ॥ जानि चुके महिपाल इन्हें मिलि सादर श्री ऋषिराज सुलैकै । जाय सुवास दिये शुभ मंदिर

भोजन पान सुपास सबै कै ॥ है सब यद्यपि मो प्रथमै पर दुस्तर बात अहै सखिएकै। त्यागहिंगे प्रणभूप नहीं विधि वश्य हठी भजि हैं अविवेकै॥ वरारोहावचन ॥ सवैया ॥ दानि उचित्त अहै फल जो विधि तौ मिलिहै सियको वर याही। जो विधि योग सँयोगबनै भल यों कृतकृत्य सबै ह्वै जाही ॥ आवहिं नात यही नतु दुर्लभ जाय सकै तियद्वार सुनाही। पुण्य पुराकृत भूरि उदै जबहोइ सँयोग सखी इन पाही॥ पद्मगंधा वचन ॥ सवैया ॥ ज्यों मिथिलेश सुता छवि आगरि त्यों सु अनूपम रामललाहै। उत्तम वंश उभै कुलभूषण लोक प्रकाश्य सु कीर्त्यमला है॥ मोदमयी भगवंत द्विरूप विलोकत जन्म भयो सफलाहै। कैस सँयोग बन्यो इनको यह ब्याह सखी सबहीक भलाहै ॥ सुलोचना वचन ॥ सवैया ॥ शुभश्यामल बैस किशोरलला अतिसुन्दर कोमल गातअहै । तिमि गोरिमनोहरि भूपलली भलयोग बन्यो सब लोग कहै ॥ पर भूपकिये प्रणदुर्घटहैं शिवचापदलै स्वइ ब्याहुलहै। सु कठोरमहा नहिं योग्यइन्हैं अवरेब बड़ी सखि एकयहै॥ सुभगावचन ॥ सवैया ॥ कउकोउ कहै इनको सजनी लघु देखतहै सुप्रभाव महा । पदपंकज धूरि छुये जिनके ऋषिनारि तरी अघभूरिदहा ॥ शिव चापदलै बिनु सोकिरहै यप्रतीति तज्योजनि सत्यकहा। विधि चातुर खूब विचारि रच्यो दोरूप इन्हैं जस योगचहा॥ यहि भांति सखी सब आपुसमें कहि बैनरहीं प्रभु ओरचितै । फल लोचन देतसबै भगवन्त सबंधु गये मखभूमि जितै॥ पुरबालक सादर प्रेमभरे प्रभुसोकरि बातरहे सहितै। धनु यज्ञ थली यहं नाथभली रचनाद्भुत देखहु आय इतै॥ सुनि प्रेमभरे तिनके प्रभु बैन कृपाकरि आपु उतै चलिजावत। लखि शील सुभाव सनेह महा सब बालकवृन्द हिये सचुपावत ॥ शिशुसादर

संगलगे प्रभुके सुखमाद्भुत रंगधरा दिखरावत। ज्यहि ठौर जहां ज्यहि बैठकहै मृदुबैनन सो कहि नाम बतावत॥ कवित्त॥ विस्तृत विचित्र चारु चाप मखभूमि यह देखिये सुशोभकैस मंचनावलीको है। हेममणि जटित विमलबीच बेदिका सुभाग्यवन्त सूखमा अनन्त या थलीको है॥ ग्रामलोग देखत इहाँपै सब बैठि बैठि बैठक अनूप अत्र भूपमंडलीकोहै। बैठक बहारदार इतै पुर नारिनक आसनय दिव्य मिथिलेश लाड़िलीको है॥

दो० रङ्ग अवनि शोभा परम निरखि राम सचुपाय।
शिशुन प्रेमवश जानिकै अनुजहिं रहे देखाय॥

सवैया॥ तात तकौ धनुयज्ञ मही कसि मंजु प्रभा सब ठामहिं छाई। कंचन मै वर मंचन जाल जटे मणिभा लखि काम लजाई॥ क्यावरणौं यह वेदिभली छवि अद्भुत को नहिं देखि लुभाई। आनि विरञ्चि मनो सुखमा तिहुँलोकन की यह राशि लगाई॥ जा प्रभुके अनुशासनते भगवन्त सकृत्क्षवमाहिं सुमाया। सुंदर सर्व्व विभौ परिपूरण देतअहै रचिलोक निकाया॥ सो प्रभु दीनदयाल सदाकहि नेतिजिन्हैं श्रुति सन्तत गाया। चक्कितह्वै मखशाल तकैं निज भक्तनपै करि दृष्टि सुदाया॥ कौतुकदेखि चले गुरुकेढिग जानि विलम्बहि ह्वै उरआयो। जाडर सों डरके डरहोत स्वभक्ति प्रभाव सुस्वामि दिखायो॥ सुन्दर प्रेमभरे कहि बैनन बर्बस.बालनं भौन पठायो। दै भगवन्त सबै फल लोचन सानुज आयं मुनी शिरनायो॥ रोलाछंन्द॥ निशि आगमन विलोकि दीन कौशिकमुनि शासन। सहित ऋषिन रघुनाथ कीन तब संध्योपासन॥ कहहिं कथा मुनिराज सुनहिं सादर चितदीन्हे। विगत निशा युगयाम शयन मुनिवर तब कीन्हे॥

विशाल बनी मणिमै बहुक्यारी । पांतिन पांति लगे द्रुम संकुल थाल्हन पूरण निर्म्मलवारी।। रौसनकी गति क्या वरणौं मग पन्नन की रहि छाहि उज्यारी । श्रीमिथिलाधिप बाग विषे भगवन्त सबै छवि सोहत न्यारी ।। चातक हंस चकोर मयूर करै धुनि कोकिल कीर सुमैना। गुञ्जत भौंर जहां तहँ संकुल डोलत पौन भली सुख दैना।। वासकिये जहँ नित्यरहैं भगवन्त लिये ऋतुराज सुसैना। कौनसि वस्तु अहै जग में नृपबागम जो हरवक्क मिलैना।। कुण्ड-लिया।। ताके मधि सरसुभगयक सोहत परमविचित्र। मणिमै शुभ सोपान त्यहि पूरण सलिल पवित्र।। पूरण सलिल पवित्र वनज विकसे बहुरंगा। कूजत जलखगवृन्द विविध गुञ्जत तहँ भृंगा।। गुञ्जत भृङ्ग समोद उड़त पंकज रसछाके। सुरसर प्रभा अपार त-दपि समता नहिं ताके।।

दो॰ बागप्रभा दोउ बन्धु लखि भये मुदित मुदमूल।
माली सन बोले कि हम चहत लेन दलफूल।।

सवैया।। श्यामल गौर किशोर मनोहर कोटिन काम प्रभा ब-लिहारी। आपुअहैं किनके सुत सुन्दर औ क्यहिसंग इतै पगुधारी।। कौन निवास कहां क्यहि मंदिर आजुभई धनिभाग्य हमारी । सो सुखजात कह्यो भगवन्त न मोहिं भयो जस आपु निहारी ।। हैं हम श्रीअवधेश तनै मुनि संग इतै मखदेखन आये । श्रीमिथिलेश्वर पौरिटिके दलफूल लिये गुरुदेव पठाये।। शासन वेदय पूछिलिये बिनु मालिहि फूलछुवै न सुभाये। ताहित पूछत मालिकहौ दल फूल लयावहिं जाय सुहाये ।। कवित्त ।। कौशलेश चक्रवर्ति जा-नत जहान नाम बैठक सुरेशपै सिंहासनार्द्ध पावही । तासुपुत्र आपु जासु कीरति प्रसिद्ध लोक आइये सुबागहौ द्रुमावली देखा-

वहीं ॥ कञ्जहू ते कोमल अतीव मंजुपाणि आपु कंटकसवृक्ष फूल छोतैगड़ि जावहीं। रावरो न योग्यदेहु आयसु कृपाल मोहिं फूल फल दल वेगि तूरि हम लावहीं ॥ छप्पै ॥ सुनु माली ममबैन धर्म सेवक यह रीती। स्वामिकाज निज हाथकरै सन्तत सहप्रीती ॥ जो तुम्हरे रुचि होय बैठि गुरुढिग लखि मोहीं। दल फल फूल उतारि डालि लायो सजिवोहीं ॥ निज पाणि तूरि दल फूल सुठि लैजावै गुरुपहँ हमहिं। असि कठिन सहतक्षत्रीय करि तुच्छ कहा कंटक सकहिं ॥

दो० रामवचन सुनि वंदिपद कह्यो मालि करजोरि।
नाथ कृपाकरि हाथ निज लेहु पुष्पदल तोरि ॥

घारीछन्द ॥ लागिलेन फूल ज्योहिं। आइ बाग सीय त्योहिं ॥ सवैया ॥ त्यहि औसर आयसु मातु सियाहित पूजन गौरि सखी सँगलै। शुभ गावत गीत सुआइ तहां सर मज्जनकैगइँ गौरिनिलै ॥ करि पूजन प्रेम समेत विनै बहुभांति किये धरिमाथइलै। करि मातुदया वरदेहु यहै वर सुन्दर मो अनरूपमिलै ॥ त्यागि सिया सँग एक सखी सुविलोकन जातभई फुलवाई। देखिसि सो द्वउ बन्धु तहां छवि सिन्धु रही वशप्रेम लुभाई ॥ विह्वलगात पसेउ बहै अति आतुर लौटि सिया ढिग आई। तासु दशा सखि देखि कहै कहुकारण मोदयतैं कहँ पाई ॥ देखत बाग द्विराजकुमार सुश्यामल गौर उभै छविऐना। आननचन्द्र प्रभा भगवन्त विलोकत पागि चकोर सुनैना ॥ चोरि लिह्यो चित घायलकै म्वहिं मारि कटाक्षन के शरपैना। रूप अनूप कहौं किमि सो सखि बैन अनैन न नैनन बैना ॥ सुनि बैन मनोहर तासु सखी हरषीं सब आंपुसमाहिं कहैं। नृप पुत्रअली स्वइ हैं य सुना मुनिसंगम आयजु काल्हिरहैं ॥

भगवन्त लिये जिन मोहि सबै नरनारिनको निज रूपमहैं । छवि लोग जहां तहँ वर्णतहैं चलिदेखहु देखन योग्य अहैं ॥

दो० राघव दर्शन हेतु सिय चक्षुरहे अकुलानि ।
तातें त्यहि सखिके वचन अतिशै सियहि सुहानि ॥
ताहि अग्रकरि जानकी सहित सखिन सानन्द ।
चली उतै जितही रहैं सानुज रघुकुलचन्द ॥
कंकण किंकिणि नूपुरन सुनि रव राजिवनैन ।
ताहि हृदै गुनि अनुज सन कहत मधुर इमि बैन ॥

कवित्त ॥ पैदर सुगुल्म लता बाजिन समाज सोह शीतल सुगन्ध मन्द मारुत मतंगहै । पल्लव रसाल रथ चढ़ि फूल चापधारि सेनापति राजऋतु लीन्हे सेन संगहै ॥ रम्भ ध्वज जानकी प्रताप बल सखी शब्द नूपुरादि कंकण कि होत यों उतंगहै । भाग्यवन्त साजिकै सदल विश्वजीतिवेक दुंदुभीय दीन जनु भूपति अनंगहै॥

दो० बहुरि चितै त्यहिओर प्रभु सिय सुखमा हिय आनि ।
कृपासिन्धु निजबन्धु सन पुनि बोले मृदु बानि ॥

सवैया ॥ तात तको छविराशि अनूपम श्री मिथिलेश सुता यह सोई । कारण जा धनुयज्ञ अहै सुनि आवत भूप भये सब कोई॥ पूजन गौरि लयाइ सखी इत रूप अलौकिक देखत जोई । मोमन स्वच्छ सुभाय सदा तजि सीम गयो निज क्षोभित होई ॥

दो० यहिविधि गे बातें करत लतन ओट सुख ऐन ।
चकित निरखि श्रीजानकिहि कहे सखिन इमिबैन ॥

सवैया ॥ चौतनि शीश अनूंप सजे श्रुति कुण्डल लोल चलैं अमलाहै । भ्रूधनुवाण कटाक्ष सकोर सु आनन पूरणचन्द्रकलाहै॥ हास विलास हरै मनको मणिमाल लसै अति कम्बुगलाहै । क्यों

नहिं देखत सीय उतै बिच कुंदलता दोउ ठाढ़ि ललाहै॥ श्रीरघुनंदन रूपप्रभा अति देखतही मिथिलेश किशोरी। देह दशा सुधि भूलि सबै वश प्रेम अतीव सु ह्वैगइभोरी॥ त्यागि निमेषलगी अवलोकन ज्योंदिशि पूरणचंद्र चकोरी। दीन कपाट दृगंचल रामहिं आनि हृदै मग अक्षन ओरी॥

दो० जानि बिलँबकरि मातु भै धरि उर मूरति श्याम।
सहित सखिन पुनि जानकी गईं गौरिके धाम॥
श्रीगिरिजा पद बंदिकै युगल जलज करजोरि।
बोलीं सीता वचन मृदु मातु विनय सुनु मोरि॥

किरीटछन्द॥ जय जय श्री गिरिराजकुमारि सदाशिवप्राणप्रिया छबिरासिनि। गावत नेति किहे यशवेद त्रिमोहनि विश्वसबै उरवासिनि॥ उत्पतिकै जग पालिहरौ वरदानि सुरासुर ज्ञान प्रकासिनि। मातु मनोरथ पूरकरौ मम आनँदरूप स्वछंद विलासिनि॥ सेवत तोहिं सुभाय मिलैं फलचारि विनाश्रम हे गिरिनंदिनि। जाहिर लोकप्रभाव अहै तव अद्भुतरूप सुरासुरवंदिनि॥ मोर मनोरथ भाँति भली तुम जानहु मातु त्रिताप निकंदिनि। देवि विनय सुनि मोरि कृपाकरि पूरण आश करो निजछंदिनि॥ गिरिजावचन॥ सवैया॥ मम सत्य अशीष य सीय सुनौ तव जैहहिं पूर मनोरथ ह्वै। मुनि नारद बैन पुनीत सदा सब ह्वैहहिं सत्य गये कहि ज्वै॥ करुणाकर शील सनेह त्वया ज्वइ जानत जानन जागतिकै। भगवंत रँगो मन जाहि नितै मिलिहै वर श्यामल सुन्दर स्वै॥

दो० गिरिजाशिष सुनि जानकी पुनिपुनि करिसुप्रणाम।
सहित सखिन सानंद मन गमन कीन्ह निजधाम॥
इत सानुज रघुवंशमणि आये कौशिकपास।

करिप्रणाम सब हाल प्रभु कीन्हे तुरत प्रकास ॥
नृप मिथिलेश बाग हम जाई। मालिहिं पूछि मुदित द्वउभाई ॥
लगे लेनदल फूल पुनीता। सहितसखिनत्यहिअवसरसीता॥
गिरिजा पद पूजन तहँ आई। रूप अनूप वरणि नहिं जाई ॥
नख शिख अमित सीयकै शोभा। देखि नाथ मेरो मन क्षोभा ॥
उनहुँ हमहिं यकटक रहि देखी। सहित सखिन परिहरी निमेखी॥
पुनि युत सखिन गौरि गृह जाई। करि पूजन जब भवन सिधाई ॥
तब हम लषण सहित इत आये। सुनि मुनिकौशिकअतिसचुपाये ॥
लहि प्रसून मुनि पूजन कीन्हों। आशिर्वाद मुदित मन दीन्हों ॥
सो॰ चिरंजीवि द्वउ भाय सफल मनोरथ होहिं सब।
सुनि सानुज सचुपाय वार वार वंदत चरण ॥
दो॰ पुनि भोजन करिकै मुदित बैठे मुनि ससमाज।
करि प्रणाम कर जोरितब बोले श्रीरघुराज ॥
निमिवंशी रघुवंश को एकै कुल रवि होय।
उत वशिष्ठ गौतम इतै हैं प्रोहित क्यों दोय ॥
बोले मुनि कि वशिष्ठ हैं प्रोहित घरके दोउ।
पर गौतम इत होनको कारण सुनि ये सोउ ॥

गीतिका छन्द ॥ यक समय निमि मखहेतु निउता सकल ऋषि राजनदियें। नहिं लीन न्योत वशिष्ठ सुरपति काजलगि स्वर्गहिं गये ॥ निमि बोलि तौ ऋषि गौतमहिं निज भौन प्रोहित करि लिये। मख पूरणांत वशिष्ठ आय कुशाप तब राजहिं दिये॥ नृप प्राणतन भे हीन निमिहू शाप मुनि तनु तजिदियो। विधिकी कृपा मुनिराज पुनि तनुपाय अति हरषित हियो ॥ तुम करहु पलकन बास बिनुतनु निमिहि ऋषि गौतमकहा। पुनि देह निमि मथवाय

मैथिल पुत्र उपजाये तहा ॥ ऋषि गौतमाशीर्वादते यह कुल विदेही है गयो। भगवन्त याही हेतुते यहि माहिंप्रोहित द्वै भयो ॥

दो० विगत द्योसनिशि आगमन जानि गुरायसुपाय।
चले मुदित संध्या करन राम लषण द्वउभाय ॥
प्राचीदिशि शशिउदैलखि सियमुखसम सुखपाय।
बहुरि कहेउ सीतास्यसम नाहिंन यह निशिराय ॥

कवित्त ॥ बन्धुविष शत्रुराहु जन्मसिंधु रोगयुक्त पातकी कलंकि गुरुतीय रति ठानी है। पंकजको द्रोही दिन मन्द घट बढ़ होत रहतन एकरस कोक दुःखदानी है ॥ विरही दुखावै नित व्योमबीच धावै कल पलहू न पावै भूरि औगुण कि खानी है ॥ चन्द रंक ऊपमान योग्य पाव भाग्यवन्त आनँदको कन्द मुख सीय सुखदानी है ॥

दो० सीतानन शशि मिसुवरणि जानि निशा बड़िराम।
आय गुरुहिं शिरनाय लहि शासन किय विश्राम ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रवाटिकावलोकनवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० प्रात जागि प्रभु बन्धुसन बोले अतिमृदु बैन।
तात लखहु पूषण उदै सकल लोक सुख दैन ॥
सुनिलच्मणशिरनायपद जोरि जलजयुगपाणि।
प्रभु प्रभाव दर्शायकै कहेउ मधुर इमि बाणि ॥

सवैया ॥ भानु किये तम नाश यथा तिमि राउर शङ्करचाप दलैंगे। ह्वैहहिं दुष्ट महीप नखत्त मलीन सुपङ्कज सन्त खिलैंगे ॥ ज्योंहिं उलूक लुके दिन त्यों खलवृन्दन के नहिं खोज मिलैंगे। चन्द प्रकाश तज्यो जिमि त्यों परशाधरहू निज गर्व दिलैंगे ॥

दो० यथा उदै रविके जगत प्रगट प्रकाश कलाप।

तथा दलत शङ्कर धनुष फैली आप प्रताप॥

तोमरछन्द॥ सुनि बन्धुके इमि बैन। बिहँसे कृपा सुख ऐन॥
तोटकछन्द॥ पुनि मज्जत सानुज रामभये। करि नित्यक्रिया गुरु पाहिं गये॥

दो० त्यहि अवसर आयसु जनक शतानन्द तहँ आय।
कौशिक मुनि पद बन्दिकै कहे वचन सुखदाय॥

स०॥ पठये मिथिलेश हमें मुनिसो तुम जायक हाल कहौ सकला। हित शम्भु शरासन तोरनके नृप आवतभे बहु रङ्गथला॥ करि हारि गये बल भूप बली पर नाहिंन सोक्यहुं नेकुहला। मम शोच हरौप्रभु आय कृपाकरि लै सँग लछ्मण रामलला॥

दो० शतानन्दके वचन सुनि कह्यो मुदित मुनिनाथ।
बोलि पठाये जनक नृप चलहु लषण रघुनाथ॥
सीय स्वयम्बर काज हित आये बहु अवनीश।
आजु बड़ाई काहिधौं देखी देवै ईश॥
कह्यो लषण जापै कृपा मुनिनायक तौ होय।
राजसभा के बीच में यश भाजन है सोय॥
सुनि लछ्मण के वचन वर भये मुदित मुनिवृन्द।
होहिं मनोरथ सफल सब दिय अशीस सुखकन्द॥

क०॥ सानुज कृपाल रामचन्द मुनिवृन्द संग देखनार्थ चाप मख शालही सिधाये हैं। आय रङ्गभूमि में द्विबन्धु पाय हाल ग्राम नारि नर बालक सवृद्ध युवा धाये हैं॥ देखि मिथिलेश भीर भूरि बोलि भृत्य दीन आयसु सचन यथायोग्य बैठाये हैं। ताहीक्षण भाग्यवन्त रूपगुण शीलसिन्धु आनँद अगार द्वौ कुमारभूप आये हैं॥

दो० जिनके उर अन्तर बिषे रही भावना जैसि।

रामचन्द्र मूरति मधुर तिन देखी तहँ तैसि॥
कोऊ सुत कोऊ सुहृद कउ बिराट कउ इष्ट।
कउ स्वामी कउ रिपु सखा कोऊ नृपति सरिष्ट॥
रामहिं चितवत भाव ज्यहि सिय सनेह सो सुक्ख।
शेष गणेश न कहिसकैं क्यों वरणे यक मुक्ख॥

सवैया॥ राजत राज समाज उभै अवधेश कुमार प्रभा सुख ऐना। पूरण चन्द्र शुभानन सुन्दर मंजु विशाल सुपंकजनैना॥ गोल कपोलसजैं श्रुति कुण्डल बोलत चारु अमोल सुबैना। श्याःमल गौरकिशोर मनोहर को अस जो लखि रूप ठगैना॥ चौतनि शीश सजै तिलकांकित भाल सुमेचक केशसुहाये। बाहु विशाल धेर धनुबान दुकूल कसे कटि तून लगाये॥ अंगन अंग अपार प्रभा भगवन्त विलोकत काम लजाये। देखिभये सबलोग सुखी छविसिन्धु उभै दशस्यंदनजाये॥

दो० नृप विदेह द्वउबन्धु लखि भै मन परम निहाल।
मुनि पदपद्म प्रणाम करि कहे सकल निजहाल॥

कवित्त॥ एकबार पूजनार्थ चापथल लेपिबेक आई आपु रानि नासुकन्यकै पठाई है। आइ सो उठाइ चाप चारौकोर चौकादीन फेरि धरि वाहीथल भौनको सिधाई है॥ देखिहौ सशोच पूँछि रानि जानि हाल सब्बे कीन मय प्रण चाप जोई तोरिफाई है। ब्याहे सोई जानकी बदनदश बाण आदि सके न चढ़ाय फेरि भौनगे लजाई है॥ सवैया॥ महिपाल बहोरि दिखाइ सबै मुनि कौशिक को शुभ रङ्गथली। चितवैं सब चक्रित बन्धु द्वऊ चलि जाहिं जुंहां जब जौन गली॥ रुचि जाहि यथा भगवन्तरही सुतथाहि लख्यो प्रभुभा अमली। मुनिराज कह्यो मिथिलेश कियो रचना अति उत्तम शोभ

भली ॥ सब मंचन ते यक मंच विशाल प्रभा ज्यहिकी सब माहिं जुदे । मणि चित्रित कंचन मे झलकै अटकै तितही जितही मनु- दे ॥ मुनि संयुत राजकुमार तहां बैठाय महीपसु आसनुदे । भगवन्त कहौं किमिसो सुखमा त्यहिमंच मनो युग चन्द उदे ॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि नृपगण उडुप समाज ।
भयमलीन यकटकलखै ज्यों चकोर द्विजराज ॥

साधु भूप ॥ सवैया ॥ यप्रतीत सबै रघुनन्दनजू दलिहैं शिवचाप सँदेह नहीं । न दलैं तबहूं अस जानिपरै सिय मेलि इन्हें जयमाल सही ॥ सुविचारि प्रताप बलै यश तेज गवांय पयानकरौ घरही । सिय ब्याहन आश विहाय सबै तजि मोह भजौ रघुनन्दनही ॥ दुष्ट भूप ॥ सवैया ॥ तोरयहु शंकर चाप अहै अवगाह महा सिय ब्याह- बभाई । है असको जग वीर बड़ो धनुभङ्ग विना सिय जो लै जाई ॥ राजनकी गन कौन कहै यकबारजु कालहु सम्मुख आई । तौसु वि- वाहब सीय हमै महिसंयुग में त्यहि मारि हटाई ॥ साधुभूप ॥ क- वित्त ॥ व्यर्थही बजावतेहौ गाल तुम भूप सब आवत न लाज बैन बोलौ न सँभारिकै । जानहू न तेज बल राघवलषणकेर राखे मुनि यज्ञ जे असुरवृन्दमारिकै ॥ तोरि चाप ब्याहैंगे विदेहजा नशंक नेकु गर्ववन्त भूपन को गर्व सर्व टारिकै । जानि जक्क मातु पितु राम सीय भाग्यवंत लेहु क्यों न शोभ भरि नैनन निहारिकै ॥ सवैया ॥ लखि राघवसीय स्वरूप अनूप लहे हम तौ जगजन्म फला । सुख जात कह्यो नहिं जोहिभयो बहुजन्मन को दुखदोष दला ॥ नहिं मानहु तौ तुम जाय करौ मनलागहि जाकहँ जोइ भला । कहियों सुमहीप लगे भगवन्त लखै प्रभु आननचंद कला ॥ जानिसमैसु विदेह शतानँद भेजि तहां सिय बोलि पठाई । आयसु मातु समोद

सखी सजि भूषण चीर सुअंग बनाई॥ गावत गीत मनोहर सादर सीतहिलै चलि संग लिवाई। श्रीजगदम्बिक रूप प्रभा भगवन्त कहै किमि शेष सकाई॥

दो० रंग अवनि आईं जबहिं निरखिरूप, नरनारि।
भे मोहित ज्यों मृग मृगी दीपक ज्योति निहारि॥

छप्पै॥ जनक नगर नर नारि राम सिय रूप निहारी। करहिं बिनय बिधि पाहिं जोरिकर अंचलधारी॥ हे बिधि दीनदयाल कृपा करि यह बरदीजै। होय रामसिय ब्याहु लाहु लोचन भरिलीजै॥ शिवचाप तोरि प्रणपालि नृप मुदित राम सीतहि बरय। मसि बदन लाय भूपति सकल सकुचि जाहिं निज २ घरय॥ रोलाछन्द। बन्दीजनकी सुता एक ताको यहकामा। होय स्वयम्बर सुताजासु जावै त्यहिधामा॥ लै कन्या जयमाल जबहिं भूपन ढिग जावै। तब तहँ ताके संग अग्र सो बचन सुनावै॥ भूपन को कुल गोत्र राज्य पितु सह त्यहि नामा। बल प्रताप यश कीर्ति सकल बरणै त्यहि ठामा॥ सो कन्या सुनिलेइ बहुरि भावै मन जोई। तासु भूप के कण्ठमेलि जयमाला देई॥ जयमाला जो पाव ताहि भूषणबसन देवै। यजमानी को हक सुता पितुसों सो लेवै॥

दो० ताके सँग लिय जानकी करसरोज जयमाल।
सहित सखिन आईं तहां बैठे जहां भुवाल॥
एक ओरते नृपन को नाम गोत्र कुल थान।
सीतासन सोइ कन्यका लागी करै बखान॥

दिगपालछन्द॥ ये भानुदत्त पुत्र बीरबाहुनाम याको। हे कौशल कुल क्षत्री बंगदेश राजबाँको॥ अति तेजवन्त शूर बीर सत्य शौचदानी। शुभ शांति शील बिद्यारत धर्म्म भक्त ज्ञानी॥ शिव

चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये चित्रकेतु पुत्र श्रीदत्तनाम याको । है चंद्रवंश क्षत्री वैदर्भराज बाँको ॥ भलजान बाणविद्या गुणधाम वीरशूरो । बल बुद्धि धर्मधारी श्री शम्भुभक्तरूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये हरिश्चंद्र पुत्र विष्णुदत्त नाम याको । है पुरुवंश क्षत्री करनाटक राजबाँको ॥ गुणशील सिंधु ज्ञानी यशनाम लोकजानै । बलवंत धर्मधारी रत सत्यसंध दानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासन मन भावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सुयशकेतु पुत्र भानुवन्तनाम याको । है कश्यपकुल क्षत्री देशद्राविण राज बाँको ॥ ये सत्यसन्ध ज्ञानी बुद्धि धर्मवन्त पूरो । श्रुतिशास्त्र रीति पालै गुणवन्त भक्तरूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासन मन भावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सत्यवंत पुत्र विक्रमध्वज नाम याको । है भानुवंश क्षत्री महाराष्ट्र राजबांको ॥ भलनीति धर्म ज्ञाता बलवन्त प्रजापालै । ये जान चापविद्या गुण सिन्धु क्षमाआलै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भावासुरपुत्र नाम लवणासुरयाको । है आख्य दैत्यवंशी शूरसेन राजबाँको ॥ बल-वन्त वीरऐसो चढ़िलंक जीतिलायो । दशकण्ठ भगिनि व्याही यश पुञ्ज लोकछायो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ येब्रह्मदत्त पुत्र चित्रकेतु नामयाको । है गर्गगोत्र क्षत्री गुजरात राजबाँको ॥ ये धर्म्मवन्त विद्या भलनीति प्रीतिजानै । हरिभक्त संतसेवी रत सत्यसंधज्ञानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमालसबै

लोकन यशछावै ॥ ये पुत्र भूपकेकै जुधाजित्सु नामयाको। हैयव त्सकुलक्षत्री काश्मीर राजबाँको ॥ बुद्धिशांति शील विद्या गुणवन्त वीरशूरो। अति तेजवन्त ज्ञानी प्रजापाल धर्म्म पूरो ॥ शिव चाप जोन टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सुकीर्तिवन्त पुत्र श्रुतिसेन नामयाको। है कोशल कुल क्षत्रीवन्तिका राजबांको ॥ ये धर्म्मवन्त ज्ञानी हरिभक्त नीतिज्ञाता। तपसत्य दयादानी मुनि साधुन सुखदाता ॥ शिव चाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सुचित्रभानुपुत्र यशकेतु नामयाको। है गाल्हव कुलक्षत्री हरद्वार राजबाँको ॥ श्रीशंभु भक्तरूरो रतनीति रीतिदानै। बलसिन्धु बुद्धिआलै धनुविद्या भलजानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भानुभद्रपुत्र तुंगध्वज नामयाको। है गौतम कुलक्षत्री चीनदेश राजबाँको ॥ ये खानि बुद्धि विद्या गुणवन्त शूरभारी। नयधर्म ज्ञान राशी बलवन्त खड्गधारी ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासनमनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भूप यश केतु पुत्र श्रीवन्तनाम याको। है भानुवंश क्षत्री इलाव्रत राजबाँको ॥ ये दक्ष बाणविद्या शिवभक्त वीरशूरो। बल बुद्धि तेजराशी शुभधर्म्मवन्तपूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भूप गुणकेतु पुत्र शुभदत्त नाम याको। है कश्यप कुल क्षत्री भद्राश्व राजबाँको ॥ गुणवंत भक्तरूरो वासुदेव इष्ट मानै। रत दान धर्म ज्ञानी श्रुति शास्त्र नीति जानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये चित्रभानु पुत्र ध्वजकीर्तिनाम याको। है सोमबंश क्षत्री

हरिवर्ष राज बाँको॥ तप तेजवन्त शूरो बल धर्मवन्त ज्ञानी। श्रीनृसिंह पादसेवी है सत्यसन्ध दानी॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ येहैं सुधृष्टपुत्र बीरकेतु नाम याको। कुशकेतु बंश क्षत्री केतुमाल राजबाँको॥ ये मानइष्ट कामदेव रूपवन्त भारी। यश तेजवन्त शूरो गुणवन्त क्षमाकारी। शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये सत्यवंत पुत्रधर्मकेतु नामयाको। है उत्तमकुल क्षत्री रम्यकेतु राजबाँको॥ तपसत्यशौच ज्ञानी बुद्धि नीतिवन्तपूरो। गुणशील शांतिआलै हरिमत्स्य भक्तरूरो॥ शिव चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये प्रस्तसेन पुत्र धीरकेतुनाम याको। है पुरुवंश क्षत्री कुरुखण्ड राजबाँको॥ वाराहरूपसेवी बलबीर धीरदानी। शुचिशांति शीलआलै नय सत्यवन्त ज्ञानी॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै॥ ये सत्रजित्सु पुत्र हरिवर्मनाम याको। है कोशल कुलक्षत्री किम्पुरुषराजबाँको॥ गुणवन्त ज्ञानमानी श्रीरामभक्त रूरो। श्रुति शास्त्र नीतिज्ञाता बुधिवंत बीरशूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै॥ ये भानुबंशक्षत्री दशरत्थ पुत्रमानी। है भरतखण्ड माहीं श्रीऔधराजधानी॥ श्रीरामनाम इनको पितुकीर्ति लोकछायो। ये सत्यसंध दानी यशनाम वेदगायो॥ गुणवन्त बीरबांके बहुदुष्ट वृन्दमारी। मुनि कौशिक मखराखे मग गौतम तिय तारी॥ शिव चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबैलोकन यशछावै॥ ये भानुबंश माहीं दशरत्थपुत्र ज्ञानी। है लक्ष्मण नाम इनको लघु

बन्धु रामजानी॥ विद्यावल शील शक्ति तेजवन्त बीर शूरो। गुण-
वन्त बुद्धिराशी शुचि धर्मवन्त पूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु
शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै॥

दो० यहिविधि सों सब नृपनके कहेनाम गुणगाय।
सहित सखिन पुनि जानकी बैठी आसन आय॥
राम सीय शोभा अतुल निरखि देव समुदाय।
बर्षिसुमन कहि जैतिजै हर्ष न ह्वदै समाय॥

इतिश्रीदशअयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे
श्रीरामचन्द्ररङ्गभूमिआगमनवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

दो० त्यहि अवसर बंदीजनन पठये जनक बुलाय।
कह्यो कहौ सब नृपन सों प्रणहमार तुमजाय॥
सुनि शासन नरनाहको भाट सहसदश सद्य।
भुज उठाय बोले बचन राजसभाके मध्य॥
सुनहु बचन भूपति सकल चितलगाय दै कान।
जनकराज महराजको प्रण हम करैं बखान॥

क०॥ रेख बज्रदन्त ज्यों गयन्द को तथाहि प्रण जानिये वि-
देह राज लोक वेद ख्यातहै। शङ्कर पिनाक शैल शम्भुते गरू अ-
पार भूमिही के सङ्ग रचि दीनज्यों बिधातहै॥ परमकठोर कूर्म पृष्ठिहू
ते पुष्टबाण रावणादि बीर बाँवदीन जाल खात है। सोई यह शम्भु
चाप तोरि है जु आजु ताहि ब्याहिहै विदेहजा कहत सत्यबातहै॥
रङ्गराज शीशताज आज या समाज़ सोइ लेइ जो प्रचण्ड दण्ड
शम्भुको उठाइहै। खैंचि तोरि डारि है जु याहि शूरबीर कोइ कीरति
कलाप तासुलोक लोक छाइहै॥ भाग्यवन्त कण्ठताहि मेलिमाल
जैकिशोरि आनँद समेत ब्याहि जानकी सुपाइहै। होय बल तो-

रिबे समान सो धरै पिनाक राजन समाज मुख कारिख न लाइहै ॥ बाम परधाम धन हेत देत प्राणहद्धि मानत न मातु पितु काम क्रोधलै रह्यो । देतहै प्रजै प्रचगड क्लेश बाँधि सेतु पाप पुरय को बिनाशिकै अधर्म मार्ग में बह्यो ॥ त्यागि सत्य धारत असत्य काल कौन्यहूम देतहै न दान अग्निलाय ग्राम जे दह्यो । भाट बैन मानिकै कलंकरूप भूपऐस शङ्कर पिनाक को न भूलि हाथसे गह्यो ॥ ज्ञानधर्म्म लेशनाहिं मानहीन पितृदेव साधुन सताव देतगारि माय बापही । शत्रुबीर संयुग बिलोकि देत पीठिताहि बिप्रन को दानदै सु फेरि लेत आपही ॥ नित्यही मदान्ध पंथ जानहीन वेद शास्त्र काम क्रोध बश्य याम आठ कृत्य पापही । राजन समाज में पसारि हाथ भाट बैन भाषही छुयो न भूप ऐस शम्भु चापही ॥

सवैया ॥ जिनके नहिं धर्म्म दया मनमें गुरु साधुन की नहिं सेवकरै । परनारि सदारत लाज नहीं शरणागत को नहिं दुःखहरै ॥ प्रतिकूल सुपंथ कुपंथ चलै पितु मातन सों बसुयाम लरै । मुख कारिख लागहि गो तिनके इमि भूपति ना शिव चापधरै ॥

कवित्त ॥ चंद्र सों प्रकाशमान कीरति कलाप लोक पावक समान दीप्ति जाग जासु चंडहै । भाग्यवन्त बुद्धिवन्त ऐस ज्यों सु एकदन्त तेजवन्त भूरि ज्यों प्रसिद्ध मारतरडहै ॥ भूमिभार धारिबे मधीरमान शेष जैस पौनहूते पुञ्ज जौन बीर बरवरड है । रङ्गभूमि मध्यआजु होइ जो मही प ऐस लेइ सो उठाय बेगि चंद्रमौलि दंड है ॥ कैतो भूपरूप धारि शङ्कर समाज माँझ आये होइँ लेइँ ते उठाय सद्य चापहै । कालकूट तेज ते जरत देखि देव दैत्य कारुणीक शम्भुताहि कीन पान आपहै ॥ खोलिनैन जोर मैन त्रिपुर दनुज दुष्ट मारेबान एक दुःखदेत जो कलापहै । लोकनाशकारक

सुजन तापहारक भवाब्धि घोरतारक प्रसिद्ध जा प्रतापहै ॥ कैतौ विधि सारिखे प्रतापवन्त होय भूप जासु यश विस्तृत कलाप ठांव ठांवई । भाग्यवन्त बुद्धि तीव्र चातुरी प्रसिद्ध जासुलोक रचिदीन जो सकल सृष्टि जावई ॥ शैल सरिताल जाल दिग्गज समुद्र सात कानन अपार जीवजन्तु को गनावई । होय जों प्रचंड ऐस आय सो दलै पिनाक जानकी समेत जै त्रिलोक आजु पावई ॥ कैतौ हरि आपरूप भूपको अनूपधारि आये या समाज मध्यहोयँ शोभ शालहै। कोलरूप धारिजे हिरण्य अक्षपातकीक दीनबंधु मारे आपु पैठिकै पतालहै॥ कीनहै कंमठ पृष्ठि धारण सुमंदराद्रि गावत सुयश चारु जाको वेदजालहै। भाग्यवन्त स्वामि सो सबल भूमिभार हार तोरही उठायचाप शङ्कर विशालहै ॥ सवैया ॥ कै गणनायक सों वरदायक जाहि सुरासुर शङ्कर ध्यावै। विघ्नविनाशन बानिअहै सुमिरे ज्यहि सिद्धि सबै जनपावै॥ जासुप्रभाव महाप्रथमै पदपंकज पूज्य सदा सब ठावै । जो इमि होय महीप कऊ भगवन्त स्वई यह चाप उठावै ॥ कै हरिचन्द समान हुवैसति कीरति जासु चहूँदिशि छाई । कै पृथुसों गहि बर्बस ज लिय धेनु स्वरूप धराहि दुहाई ॥ कै रघुसों जिन पीठिलही रिपुनाहिंन नानहि याचक पाई । दृष्टि दिये परनारि नहीं इमि भूपचहै धनुलेहि उठाई ॥ कै नृपबान समान कऊ परिपूरण जो सब धर्महिपालै। कैसुदिलीप समान जिन्हैं डरगो हरि वारिपिये यक आलै ॥ कैजिमि सागर जासुत सागर खोदिगये सब पैठि पतालै । कैसुययाति दधीचि भगीरथ ज्यों नृपसो शिव शारँगदालै ॥ छप्पै ॥ देवदनुज मुनि सिद्धमनुज गंध्रवदि कपाला। पितृनाग शशि भानु यक्ष मारुत यमकाली ॥ गिरिसरि सिंधु अपार जहाँलगि वेदन गाये। रङ्गभूमि कै माहिं आजुते सब

चलिआये ॥ त्यहि सभामध्य बंदी वचन कहत सबहिं गोहरायकै ।
बलहोय जाहि सो उठि तुरत तोरै शिवधनु आयकै ॥

दो० सुनि विदेह प्रण भूपसब उठे तुरत अभिलाखि ।
परिकर कटिकसि बांधिके चलत भये मनमाखि ॥

सवैया ॥ निज इष्टनवंदि महीपति मानि सुधाय सक्रुद्ध पिनाक धरै । तजि एक दियै गहिएक लियै इमि बारहिंबार सुजोर भरै ॥ बल बुद्धि उपाय अनेक करै पर नाहिंन सो कहुं नेकुटरै । ह्वय लज्जित हारि गँवाय बलै तब आसन ओर पयान करै ॥

दो० तब सहस्र दश भूपमिलि शिवधनु एकहि संग ।
लागि उठावन नहिं टस्यो कियोमान तिन भंग ॥

सवैया ॥ श्रीहत भूप समाज भये सब देखिय ज्यों दिन चन्द्रकला है । हारिगये करिभूरि बलै सब भूपनको धनुमान दला है ॥ घोर कठोर शरासन शम्भु रती नहिं छांड़त भूमि तलाहै । ज्योंजन कामिहि बैन सती मनपावन नाकहुँ रंच चलाहै ॥ शिवचाप सुमेरुहुते गरु भो नहिं छाँड़त जो तिलमात्र धरै । नहिं हालत डोलतहै तनकौ जनु जामतभो यह शेषशिरै ॥ शिव आप चढ़्यो यहि ऊपरकै गरुता स्वइ नाहिन देतमुरै । लियभार उदै गिरिअस्त किधौं धनुरूप धर्यो महिंजानि परै ॥

दो० नृपसमाज गति देखिकै उठे जनक अकुलाय ।
बोले वचन सक्रोध तब भूपन सबहिं सुनाय ॥

सवैया ॥ नाग सुरासुर भूपजिते धरि मानुषदेह इतै सब आये । तोरनको धनु कौनकहै नृपकाहु न रञ्चक भूमि छड़ाये ॥ कीरतिजे बड़ि दिव्यसुता जनु पावनहार न ब्रह्मउपाये । जाहुघरै अब गर्व करै जनि कोउ धरापर बीर न जाये ॥ जो जनत्यों भटहीन मही

करत्यों इमि तौ प्रथमें प्रण मैंना । जो करिकै अब ताहि तजौं मम धर्म नशै भल कोउकहैना ॥ पुत्रिकुमारि रहै हमकाकरि कर्म लिखा कइमेटि सकैना । जाउघरै मुख कारिखदै सियब्याह विरश्चि कियो लिखबैना ॥ श्रीमिथिलाधिप बैनलगे इमि लक्ष्मणके उर ज्यों शरपैना । राघवत्रास न बोलिसकैं रिसशोण भयो मुख पंकजनैना ॥ ठाढ़ेभये करसम्पुट कै शिरनाय कहे प्रभुसों इमिबैना । नाथ विदेह कहे कटु ज्यों रघुवंश समाज कहै तिमि कैना ॥ कवित्त ॥ भूप मिथिलेश आपुवात ना सँभारि कीन तुच्छका पिनाक रामशासन जु पावऊं । गेंदसो उठाय भौन चौदहौं समान घटभूमि को पटकि फोरि मेरुको उखारऊं ॥ शेष केशधारि खैंचि भूमिदेउँ बोरिसिंधु सिंधुलै रसातल मझारभरि आवऊं । भाग्यवन्त देउं करिदिग्गज यकत्र सर्व भूमिसा पिनाक शंभु ख्यालही उठावऊं ॥ सवैया ॥ सत्यकहौं नहिं झूठकछू रघुनायक जो तव आयसु पावौं । तौ यहिराज समाज बिषे मिथिलाधिपको निज बूत दिखावौं ॥ पंकजनाल समान चढ़ाय पिनाक लिये शतयोजन धावौं । तोरि मिलै रजदेउँ करौंनहिं तौ कर ना धनुबान उठावौं ॥ तामरसछन्द ॥ लषण कहे इमि बैन जबैहैं । डरतभये सुनि भूपसबै हैं ॥ डगमग भू सब दिग्गज डोले । जनकशके जब लक्ष्मण बोले ॥ जनमनमोद सिया हरषानी । सुख रघुनंद लहे मुनिज्ञानी ॥ पुरजनहीं अतिशै सचु पायें । रघुबर सैनहि बंधु क्षमाये ॥ सहित सनेह लगे निज राखा । तब प्रभुसों मुनि कौशिक भाखा ॥ सवैया ॥ रामउठौ शिवचाप दलौ मिथिलाधिप को दुखमेटहु भारी । शोचहरौ य सभाक सबै भगवन्त करौ सुरसंत सुखारी ॥ चाप उठाय सुरेन्नृप जे मुख कारिख दै गवनै घर झारी । पंकजनाल समान करौ यहि खंडन सद्य पिनाक पुरारी ॥

सुनतै गुरुबैन उठे रघुनन्द हृदय नहिं हर्ष विषादलये। पदनाय सुभाल सुभायचले मधिवेदि पिनाक समीप गये॥ भगवन्त प्रभा पुर लोग निहारि सँभारत आपनि पुण्यभये। सुरसानँद वर्षि प्र- सून सबै नभसंकुल दुंदुभि शब्द दये॥

दो० सीयमातु लखि रामतनु अति कोमल छवि ऐन।
सखिन समीप बुलायकह सहित प्रेम मृदुबैन॥

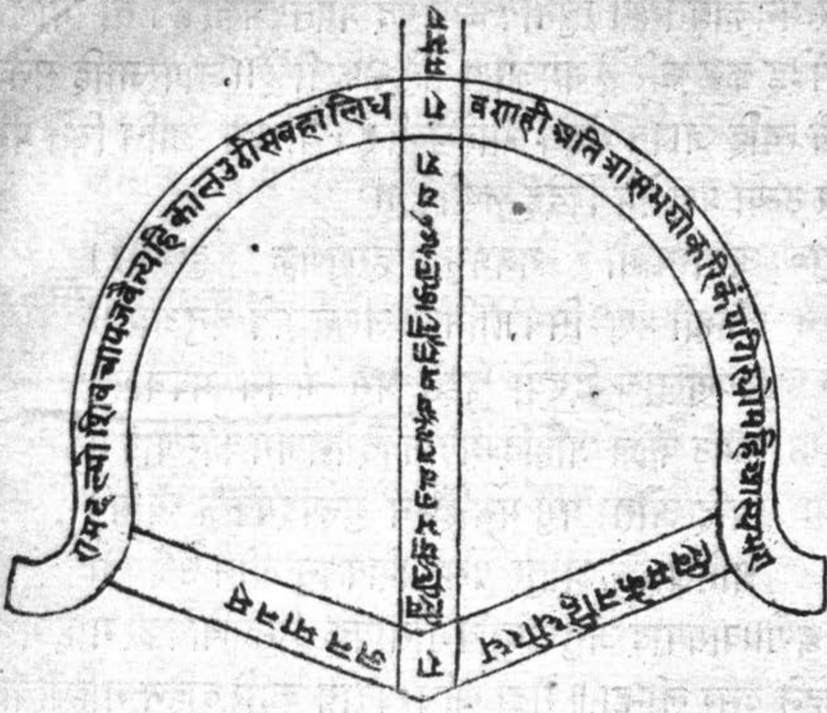
हरिपदछंद॥ देखौ सखि यहि सभामांझ हैं बैठे चतुर अपारा। यह अनुचित अतिहोत बातहै कोउ न करत विचारा॥ गरुव कठोर कहां शंकरधनु येतौ अति सुकुमारे। रावण बाण महाभट जाको दे- खत गवहिं सिधारे॥ अपरभूप बलवंत बलैकरि परमहार सब पायो। त्यहिं करषणहित राजकुमारै अब मिलि सकल पठायो॥ सोलखि होत हृदै मेरे दुख बरजत कउ न अहावै। हंससुवन किमि कहौ सखीरी मंदरमेरु उठावै॥ सुनिबोली सखिबैन गनौनाहिं तेजवन्त लघु रानी। देखत लघु रबि उदैहोत ज्यहिं तीनि भुवन तमहानी॥ प्रणव मंत्रलघु विवश जासुहैं विधि हरि हर सुरसर्वा। कहँ गयंद ताको वश अपने राखत आंकुश खर्वा॥ अस बिचारि संदेह करौ जनि इनहिं अतुलबल जानी। बिनहिं प्रयास शंभुधनु दलिहैं मानु सत्यमम बानी॥ सखी वचनसुनि मातुसुनैनै भईधीर मनमाहीं। लगी लखन भगवन्तरूप छबि प्रेमजात कहि नाहीं॥ सवैया॥ ता क्षण रामहिं देखि सिया मनमाहिं उठी अतिशै अकुलाई। घोरक- ठोर शरासन शङ्कर रावणबाण सके न उठाई॥ ये अति कोमल क्यों दलिहैं प्रणठानत नीकभयो नहिंराई। काहकहौं मतिभोरि सबै भइ देखत नां कउ हानि भलाई॥ हे गणनायक शम्भुशिवा दुख भंजन रंजन भक्त सदाई। होहु प्रसन्न कृपाकरिये प्रभु सेव किह्यों

तव आजुहि लाई ॥ पूरण आशाकरौ मनकी धनु कौतुक भंगकरैं रघुराई । कै हित मोर हरौगरुता धनु राघव बाँहन होहु सहाई ॥ जो हमरे मनकाय गिरा रघुनायक के पद प्रीति भली है। तौ मिलिहैं न संदेह कछू करि हैं ममआश सबै सफली है ॥ जापरजाहि सनेह मिलै त्यहि आवत संतत रीतिचली है। यों मन आनि चितै प्रभु ओर ठन्यो प्रण प्रेम विदेह लली है ॥

दो॰ अन्तरयामी रामप्रभु हरणभक्त दुखघोर।
कीन्ह्यों प्रण सियजानिकै लखत भये धनुओर ॥
लषणलाल देख्यो चहत प्रभु भंजन भवचाप।
कमठ कोल अहिदिग्गजन दियेसजग करिआप ॥
त्यहि औसर प्रभु मनहिंमन गुरुपदपंकज ध्याय।
अतिलाघव आतुर परम शिवधनु लीन उठाय ॥

छप्पै॥ बामपाद अंगुष्ठदाबि गोसायक दीन्हा॥ बायेंकर गहि मध्य दाहिने दूसर लीन्हा ॥ रोदा खैंचि चढ़ाय बहुरि दहिने गहिबीचा। दमक्यो दामिनि सरिस भयो नभ इव जबईंचा ॥ भयो कठिन घोर गम्भीर त्यहि समय शब्द त्रिभुवन भरयो । सब लखत दलत काहु न लख्यो राम खण्ड द्वउमहि धरयो ॥ कवित्त ॥ हालउर्वि गुर्वि अद्रि दिग्गज सकंपमान उछल समुद्र दिगपाल गे सन्नाका है। कोलहू कमठ व्याल जालभे विकल चौंकि शङ्कर विरञ्चि काहहोत भो धमाकाहै॥ देवगण चक्रित विमान भानु चंद्रमाक धाय लड़िजात एक मांहिं भें धड़ाकाहै । भाग्यवन्त लोक लोक छायगो प्रचण्ड शोर खंड्यो रामचन्द्र दण्डखैंचि ज्यों तड़ाकाहै ॥ सवैया ॥ रामदल्यो शिवचाप जबै त्यहिकाल उठी सब हालिधरा। रावणही अतित्रास भयो करिकम्प गिरयो महि आस्यभरा ॥ सखिसके नहिं धीरधरा;

घर राजन मानस मान जरा । राखिलियो भगवन्तनृपै प्रणलोक तिहूं यशराम भरा ॥

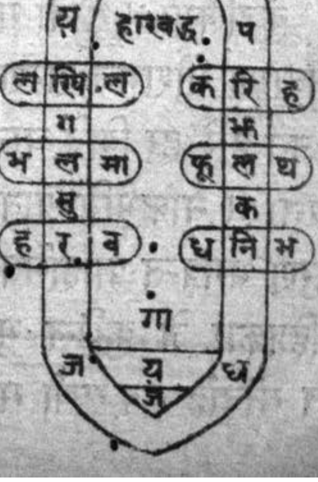


कवित्त ॥ कुलिशकठोर दंड वीरबरिबंड भूरि हारिगे उठायरंच काहु तौन मोराहै । बाण दशकंधवीर वीरताको मान जिन्हैं देखत लगाय बांबगौने भवन ओराहै ॥ प्रबल प्रचंड तेजवन्त भूपमंडली क नाश्यो प्रताप ज्यों मलीन चंद्रभोरा है । भाग्यवन्त कौशलकुमार ता समाजमध्य सेमि बीच सारिखे पिनाकशंभु तोराहै ॥ ब्योम देव दुन्दुभी बजाय भाषि जैति जैति वर्षहीं प्रसूनपुंज क्षोणि बांधि भोराहै । बंदीसूत मागध कलाप कीर्तिगानठान जैति जैति शब्द लोकतीन पूरि घोराहै ॥ भाग्यवन्त ता समय कि मोदना बखानि जात रामचन्द्र जा क्षणै पिनाक शंभु तोराहै । रंगऔनि नारि नर सानँदास्य रामचन्द्र देखैं एकटक्क ज्यों चकोर चन्द्रओराहै ॥ श्याम

कंद आभअंग अम्बर सुरंगपीत कुंडल अनूप दिव्यभूलें गोलगाल पै। चन्द्रमास्य चारुनव्य पंकजाक्ष बंक भौंह सूखमा निधानहै ति-लक उच्चभालपै॥ श्यामकेश वेशबाम बाम सोहशीश श्रोण चौ-तनी सुवोघ एतवार शोभजालपै। भाग्यवन्त रूप सूपमान आन काम कोटि वारडार अंगनांग कौशलेश लालपै॥ छप्पै॥ नवलक मलदल नयन अमलकल जनन दरदहर। सजलजलद तनलसत बसनभल चमक पटलहर॥ वदन अधरवर दशन हसन मद मदन हतन कर। अनद सदनतन सकल लखतमन परमहरषभर॥ जय सकल हरनभव भय दलन धनष जनक कर पनपलन। यश भनत अमरनर शमन अघ चरण शरण दशरथललन॥

दो० शतानंद आयसु तबहि राम हृदय जयमाल।
मेली सिय छबि देखिकै भै सबसभा निहाल॥
लखिलखि गलभल माल सुर हरवर जयजय गाय।
धनिधनिभनि कलफूलथलें भरिकरि हरिपरआय॥

कवित्त॥ कंचन सुथारथारि आरती सवांरि नारि दूब दधि रोचना सुरभि धारि फूलनै। बांधिकै भमेलजाल मंद मंद बाम वृन्द आ-वतीं करत गान देवदार भूलनै॥ बा-जत निशान व्योम दुन्दुभी बिमान साजि वर्षहीं प्रसूनमाल देव सानुकूल नै॥ भाग्यवन्त आरती उतारिवारवार देखिपावतीं अपार मोद हीय मोदमूल नै॥ दोहा॥ सियशोभा अद्भुत अ-मित देखि दुष्ट महिपाल। जहँ तहँ



आपुसमाहिं तौ लगे बजावनगाल ॥ सवैया ॥ साजि गयंद तुरंग रथै चढ़ि कूँड़िसनाह सुअस्त्रन धारो। धावहुवेगि गरेरिपुरै सिय छीनि लियोद्वउबांधि कुमारो ॥ जो बरजै मिथिलेश कछू रणसेनसमेत तिन्हैं पुनि मारो। काजसरै नहिं चापदले बिनुजीति लिये नृप वृन्द अपारो ॥ सोरठा ॥ सुनि दुष्टनके बैन साधुभूप बोले वचन। सूझततुम्हैं न नैन जक्तमातु पितु राम सिय ॥ बादिबजावत गाल नृपौ सब लाज अहै.क्यहुँ लेशनराई। तेजप्रताप गरूर गुरू बल नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥ स्वैबलकी कछुसाधन कै सुरइष्ट प्रसाद अवै कहुँ पाई। है असिबुद्धि तुम्हैं ध्रुव तौ चतुरानन आनन कारिख लाई ॥ ज्यों खगनायकको बलिभाग चहै बलकै खल पावन कागा। ज्यों खरगोश नहोश चहै खुद मत्तगयंदनके रिपुभागा ॥ ज्यों हरिसों प्रतिकूल चहै गति पावन कैमतिमन्द अभागा। त्योंहिं वृथा सिय व्याहन को तुम सारिष दुष्टन लालच लागा ॥

दो० बरकेबर रघुनाथजी वरवर पौरुष शाल।
वरसम तुम वरवर करत व्यर्थ भूतपति जाल ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितातेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीरामचंद्र धनुभंगकरणसीताजयमालमेलनवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

कुंडलिया ॥ सीता राघव पद्मपद बंदौं सब सुखदानि। निरय निवारण भौशमन शरण सुखदकी बानि ॥ शरण सुखदकी बानि भजत हरि हर विधि चरना। नामलेत अनयास मुक्त जीवन भौ मरना ॥ नाकभूमि पाताल सुयश जा आख्य पुनीता। तांकि शरण भगवन्त पाहिनित राघव सीता ॥

यहिप्रकार जे कुटिल भुवाला। रहे बंजाइ व्यर्थ सब गाला ॥
तब सीतहि सब सखी सयानी। चलीं ल्यवाइ मातुपहँ आनी ॥

गुरु समीप गवने रघुवीरा। धनुषभंग सुनि शब्द गँभीरा॥
परशुराम त्यहि अवसर आये। देखत भूप सकल डरपाये॥

सवैया॥ गौर कलेवर भूतिलसै भलिभाल त्रिपुंड्र सजे छबि ऐना। शीशजटा मुखचन्द्र प्रकाशित बंक सु भ्रू रिसलोहित नैना॥ चारुजनेउ सुमाल गरे मृगछाल विशाल लिये सुखदैना। लंक वितून कसे धनुबान गहेकर कंध कुठार सुपैना॥ कवित्त॥ देखि कै कुठार पाणि वेषकी करालताति भूपवृन्द खौफखाय धाय माथ नाये हैं। बाप साप नाम भाखि राखि पांशुपाँव माथ भूरि मानि त्रास वेष बामको बनाये हैं॥ फेरिनैन हेरही सुभाय जासुओर तासु जान गै खुटाय आयु लेनप्राण आये हैं। आयतौ विदेहराज नायमाथ बोलिपुत्रि मेलिपाँव पायकै अशीष मोद छाये हैं॥ सवैया॥ कौशिक आयमिले पुनि सादर पंकजपाँय द्विबंधुनडारी। राम सुलच्मण नामइन्हैं अवधेश कुमार विमोहितकारी॥ रामस्वरूप प्रभाति विलोकि थके भृगुनन्द निमेषविसारी। दीन अशीष भली भगवन्त भयेसुनि सानुज रामसुखारी॥ फेरि विलोकि विदेहदिशै कहु उत्सव क्या तव मंदिरआजू। कारज कौनय भीरबड़ी इत आनिजुरे सब देशनराजू॥ मैंप्रण कीन य तोरहि जोधनु ब्याहहि सो सिय तौन्यहिकाजू। आवत भे भगवन्त इतै सब देशनके नृप साजिसमाजू॥

दो०॥ नृप विदेह के वचनसुनि परशुराम रिसठानि।
बोले रेजड़ जनक तैं डारे क़रि बड़िहानि॥

परशुराम वचन॥

कवित्त॥ दीनशम्भु पूजनार्थ चापतोहिं मंदबुद्धितासुतैं अनादरे न कीन नेकु काजहै। ठानतै पनै न हीय कीन शङ्क शङ्करो कि

त्रासहू न राखिमोरि रञ्चहीन लाजहै॥ तोरे चाप दुष्टकौन कैसीसो लुकान बैठ तिक्षण कुठार अग्निदाही तौन आजहै। वेगि दे बताय मोहिं मूढ़ सो विदेहनातु उलटौं धराहि सद्यजाहँलौ तु राजहै॥ बिम्बछन्द॥ सुनिपरशुरामबानी। रिस अधिक माहिंसानी॥ सब सभयरामजानी। भयकहत आपबानी॥ राघवबचन सवैया॥ नाथ अहौं तवदासमहीं यह शम्भुशरासनकेर दलैया। आयसुकाह कहौ किनमोहिं कृपाकरि सोइकरौं यहिठैंया॥ भाविहि काहकरौं प्रभुमैं यहतौपि रहै ममहाथ टुटैया। सोकर छूतहि टूटिपरयो मुनि नायक है ममदोष नरैया॥ परशुरामबचन दोहा॥ करणी करिकै शत्रुकी बनाचहौ अबदास। तजिसमाज कीजै समर त्यागिजीव की आस॥ लच्मण बचन सवैया॥ खेलत टूटिगईं धनुहीं बहुकीन कबौं रिसयों न गुसांई। याधनुपै ममता क्यहि कारण आजुयती भृगुनाथ बढ़ाई॥ साँचिकहौ मुनिजानत ना हम भीव रहै य तुम्हैं अधिकाई। टूटिगयो जनि व्यर्थकरौ रिस हैनकछू रघुबीर लगाई॥ परशुराम बचन कबित्त॥ एरेमन्द बालक सँभारि बैन बोलु क्योंन अज्ञके समान मोहिं ज्ञानतू सिखावई। घोर शम्भुचाप जो प्रसिद्ध तीनि लोकमाहिं ताहितू समान सर्बधानुहीं बतावई॥ जानकीस रामतोहिं खेदिकै सँहारि दुष्ट डारिहौं कलाम जो बदन फेरिलावई। भाग्यवन्त मानु सत्यशीघ्रही करौं न जोपि परशुराम नामतौ न आजुते कहावई॥ लच्मण बचन सवैया॥ हे भृगुनन्द सुनौ मम जान अहैं सगरे धनु एकहिनाईं। लाभकहा यहि तोरनमें करछूतहि टूटरह्यो घुन्खाई॥ मारतहौ मुनिगाल मृषा तजिईश बियोकरि काह सकाई। जोपिनहीं यह नामप्रिया द्विजबोलि लियो कछु और धराई॥ परशुराम बचन कबित्त॥ जानना प्रभाव मोर कानना सुनै

सुभाव मारहूँन तोहि मूढ़बालक बिचारिकै। देखु या कुठारधार जाहि सों यकीसबार क्षत्रिनै सँहारि भूमि क्षत्रहीन कारिकै॥ दीन सौंपि बिप्रन समाज मैं न जानतौन साहस भुजादि बीर संयुग पछारिकै। सोई है कुठार बालगर्बिनै बिनाशकार तातमात शोकदेन मंदमोहिं रारिकै॥ लक्ष्मण बचन सवैया॥ भृगुनन्द सुनो मैं सत्य कहौं यकमानि तुम्हैं द्विजनातडरौं। नतु छीनि कुठार तुम्हैं हतिकै कुल क्षत्रिन दाँवलह्यतूं सगरौं॥ पर धर्म तुम्हैं रखवार बड़ो बधकै शिरपातक भूरिपरौं। भगवन्त डरौं पुनिराघवको नतु कौतुकही तवगर्वहरौं॥ कबित्त॥ बारबार मोहिं क्या देखावतो कुठार तानि चाहतो उड़ाय देन फूकनै पहारहै। कूम्हडेकि बातियाहौं बिप्रदेव अत्रमैंन तर्जनी बिलोकि शीघ्रहोत जो सँहारहै॥ गायबिप्रदेव साधु मारिबे म शूर नाहिं मानि बिप्रनातबैन साहत तुम्हारहै। जानि बीरकौन बाद कीजिये क्षमा समान कोटिबज्र बैनधार ब्यर्थही कुठार है॥ परशुराम बचन कबित्त॥ कौशिक सुनीय मन्द बालक य टेढ़ खोट चाहतोहै जानबेगि यम के अगारहै। भानुवंश चन्द्रमैं कलङ्करूपहीन शङ्क अंकुश बिहीन योग्य झोकिदेन भारहै॥ लीजिये बरजि जोपि चाहहु उबार याहिरोष बलबीरता सुनायकै हमारहै। भाग्यवन्त टेरि मैं कहौं न खोरि मोरि फेरि डारिहौं सँहारि याहि काढ़िकै कुठारहै॥ सवैया॥ ज्वइधार कुठार कराल भयो बहुबीर महीपन के घर घालक। स्वइ आजहु हाथ बन्यो हमरे सुनुरे मतिमन्द महीपति बालक॥ कस बोलत बैन सँभारि नहीं जड़ जानत नाम न क्रोध कहालक। मुख लागहिगो खल जो हमरें तो देहहुँ सौंपि अबै त्वहिं कालक॥ लक्ष्मण बचन कवित्त॥ आपुही अछत कीर्त्ति आपुकी बखान कौन कह्योबार भूरिशांति जोन् फेरि गावहू।

रोंकि रिस सहौ न मुनीश दुःखहीय माँहि वीरव्रती गारीदेत शोभ को न पावहू॥ शूरता बखानकरें शूरता समर आपु कायरन कामहै प्रलाप सो न लावहू। भार्गवेश बार बार हांक यों लगाव आपुमोहिं लागि मानों बेगि कालको बुलावहू॥ परशुराम वचन सवैया॥ ठानत बाद कठोरअहै शठ बाल बिचारि बधौं नहिं तोहीं। जानत मोर सुभाव नहीं कुलक्षत्रिन शत्रु सुभायन कोही॥ आवत है त्वहिं त्रास नहीं यह तिक्षणधार कुठारहि जोही। चाहतहौं बध याहिकरे अब लोगदियै जनि दूषण मोही॥ विश्वामित्र वचन सवैया॥ भृगुनन्द क्षमा अपराधकरौ यह तौपि अबै अन जानतहै। वश बाल स्वभाव न त्रासधरै तुमसों प्रतिउत्तर ठानतहै॥ शुचि साधु सुजानअहैं जगजे शिशुके गुण दोष न मानतहैं। भगवन्त करौ असजानि कृपा मुनि साधु तुम्हें सब भानतहै॥ परशुराम वचन॥ कवित्त॥ बालक विचारि तोहिं मारौं न महीपपुत्र बार बार लाव ज्वाब देतहौं बरायमें। हाथहै कुठार घोर क्रोधित सुभाव मोर द्रोही गुरुठाढ़ अग्र रहौं रिस तायमें॥ भाग्यवन्त सो तौ सब कौशिक तिहारो शील नातरु कठोरबैन हालद्यौं बतायमें। काढ़िकै कुठारघोर धारही ते याहि आजु गुरुते उऋणहोत्यों थोरही उपायमें॥ लक्ष्मण वचन कवित्त॥ शीलमुनि रावरो जहान में न जान कौन भयो है उऋणं भांति आछे तात मायसो। रहिगो गुरुको ऋण बाढ़्यो अति शोच तौन काढ़्यो जनु मेरे शीश बैठ्यो आपु खायसो॥ बीतिगये बार भूरि बाढ़्यो है कलाप ब्याज लावो ईश ब्योहरे मुनीश ह्यां बोलायसो। भाग्यवन्त जोरिकै सकल ब्याज मूलयुक्त थैली खोलि शीघ्र आजु देउँ मैं गनाय सो॥ परशुराम वचन सवैया॥ मतिमंद अरेशठ बालकतैं कुलघालक क्यों कटु बैनकहै।

उपजावत क्रोधहिये हमरे ममहाथहिका खलु मृत्युचहै॥ भल आ-
पन चाहसि जो शिशुतैं लखि घोर कुठारहि मौनरहै। नतु सत्य
पुकारि कहौं सबते अब तोहिं पठावत कालपहै ॥ लक्ष्मण वचन
सवैया॥ महिदेव कुठार दिखावत का द्विज मानितुम्हैं मनमांहिडरैं।
इमि और प्रचारत जोपिहमैं लखतू पुनितागति जौनकरैं॥ द्विजदेव
गये बढ़िधामहिं में प्रतिवीर कबौं न मिल्यो समरैं। भगवन्त सुन्यो
रघुवंशप्रभाव न कालहु जेरण त्रासधरैं॥ राघव वचन कवित्त॥
मूधमुख दूधहै न कीजिये कृपालु कोह बालभाव मानि याहि विप्रजू
क्षमाकरौ। रावरो प्रभाव जोपि जानतो कछूकनाथ भूलिहून आपुसों
य लावतो बराबरौ॥ बालक अयोग्य कामकृत्य जोपि देखिताहितात
गुरु मात मोदपुञ्ज हीयमाभरौ। भाग्यवंत शील समधीर हौ मुनीश
ज्ञानि सेवक विचारि बैन बालहीय नाधरौ लक्ष्मणवचन॥ सवैया
द्विजह्वैकरि धारण अस्त्र किये पुनि क्षत्रिनके कुल घातकहै। बिनु
कारण कोहि सुभावसदा अरु मारतभे निज मातकहै॥ उरमाहिं
दयाकर लेश नहीं रत हिंसहि में दिन रातरहै। भगवन्त विचार करौ
मनमें सुकृपाकि इन्हैं कसिवात अहै॥ परशुराम वचन सवैया॥
रामतवानुज पापमयी विष आननहै यहतौ मुखपैना। गौरशरीर
अहै मन श्याम सुभाय सुटेढ़ तुम्हैं य छजैना॥ नीच कुबुद्धि महा
यह बालक मीचुसमान हमें सु लखैना। ढीठ अतीव दबै तनको नहिं
बोलत मोहिं बराबरि बैना॥ लक्ष्मण बचन कवित्त॥ पाप मूल
क्रोध बश्य जासु है अनीति लोग करत विचारि आपुलीजे देखि
मनमें। त्यागिकै सकल क्रोधकीजिये कृपाल छोह विप्रदेव स्वामि
आपु संततांग्रिजनमें॥ टूटो चाप जुरैन रिसानै मुनि बैठे आपुबाढ़ी
है है पीर भूमिठाढ़े सो पगनमें। भाग्यवन्त प्रीत चापहोय जो अ-

तीव आपदेउतौ जुरायकै गुणीय बोलिछनमें ॥ परशुराम वचन सवैया ॥ तनसुन्दर ज्योंघट हेमलसै मनमैलभरो विषको रसज्यों। निकसै जनुज्वाल कराल महा कटुबैन कहैज्वइ बालकयों ॥ लघु भ्रातय राम विचारि तुम्हार अबैलगि मैं नहिं याहि हत्यों। कुश लात चहौ यहि बालक जो कटु बैनकहै न मना करिल्यो ॥ राघव वचन कवित्त ॥ बालकारु बरै सुभाव तुल्य एक जानि संतना बिदूषैं नाथ आपुतौ सुजानहीं। सबसे न काज सो नशायो बालबिप्र देव टूटचाप हाथ मो पराधवानहौं महीं ॥ जानिदास अपनो कृपासु कोप बन्ध वध कीजिये कृपाल जौन शीशसो सबैसहीं। जायजा प्रकार क्रोधकीजिये प्रसिद्ध तौनकरौं सो उपावनाथ याहीं काल शीघ्रहीं ॥ परशुराम बचन सवैया ॥ रामकहौ क्यहि भांति मिटै रिस हेरत बन्धु अजौंतु अनैसो। जोयहि कण्ठकुठारन दीन तु कीन कहा पुनिमैं रिसकैसो ॥ नारि महीपन गर्भकहा जु कुठार कराल बन्यो कर है सो। देखत शत्रुमहीप किशोर अबैलगि जीवत अग्रखड़ैसो ॥ महिपालन जालन घालन जो य कुठार सुकुंठित धार भयो। नहिं हाथबहै ज्यहि घातकरौं वश क्रोधहियो ममजाततयो॥ प्रतिकूलभयो बिधिमोपरहै त्यहिते फिरि मोर सुभावगयो। कसि बात कृपाकि हृदै हमरे स्वइ आजुदया दुखभूरिदयो ॥ लक्ष्मण वचन कुण्डलिया ॥ जैसी मूरति आपुकी बिप्रताहि अनुकूल। कृपाबाउ चलभूंक त्यहि भरैं वचन जनुफूल ॥ भरैं बचन जनुफूल सुनी यह जातन बाता। जरै कृपामुनिगातभये रिसराखु बिधाता॥ ताप व्याधि उरहोयकरौ औषधि पुनि तैसी। जरतहोय जलह्वाव रुचै कीजे मनजैसी ॥ परशुराम बचन सवैया ॥ देखु विदेह अहै यह बालक खोट महाकटु बोलत बैना। देखन ब्याह उछाह चहै

नहिं जानचहै सुकृतांतहि ऐना ॥ आवत कालभयो चलियाकर दोषदियो परिणाम हमैंना। जोपि उबार चहो यहिको तौ ओटकरौ किन सद्यहि नैना॥ लक्ष्मण बचन नाराचछन्द॥ रुचै उछाह जोन आपु नैनमूँदि लीजिए। परैन देखिकै कतौं वृथान क्रोधकीजिए॥ कितौं मुनीश जाहुवेगि कानने सिधायजू।नभेजि दूत आपुको पठा वकैं बुलायजू॥ राघव प्रतिपरशुराम बचन कबित्त॥ तोरि शंभुचाप शठकैरे है प्रबोध मोर कहै कटुबन्धु ताहिदीनतू सिखाई है।आपु करै बिनैछल छाड़िदे कहाउबाजु तेनी रामनाम कैतौं तोपु अस्त्र आई है॥ त्यागि छलद्रोही शम्भुकरै किनयुद्ध आय भूपपुत्र मारौं तेहिं नातौं युक्तभाई है। कहौं सत्यबचौन सुभायन मृदुल आजु देखु या कुठार घोर क्षत्रवंशहाई है॥ राघव बचन सवैया॥ सूघ्यहु दोषपरै कतहूँ शशि वक्रहिं ज्योंनहिं घेरत राहू। लक्ष्मणकेर गुनाह अहै ममऊपर तौ मुनिव्यर्थ रिसाहू॥ हाथ कुठार अहैशिर अग्ररुचै मन जो तजि क्रोध कराहू। जानि हमैं भगवन्त स्वदास करो रिसजाय यथा मुनिनाहू॥ कसियुद्ध अहै प्रभुसेवककी तजि क्रोधमुनीश कृपाहिधरौ। धनुबाण कुठारधरे लखि बालक बीर बिचारि सुक्रोध भरौ॥ नहिं चीन्हत जानत नामअहै निजबंश प्रभाव सुज्वाब करौ। मुनिवेष जुहोत्यहुतौ धरतै शिशुपङ्कज पायँन धूरि शिरौ॥ कबित्त॥ क्षमौचूक बालक अजानकी द्विजन हीय चाहिये अपार कृपा क्रोध ना हृदैधरौ। रावरो न मोहिं है बराबरी सुबिप्रदेव पादकहां माथहै बिचारंहीय मैं करौ॥ रामनाम छोट मोर रावरो बड़ो है नाम एकै गुण मेरे चाप आप माहिंनौभरौ। दातां दयावन्त दत्त तापसेंद्रिजीत ऋजु क्षमा तृष्णातोष आपु सबै भांति होवरौ॥ परशुराम वचन छप्पै॥ त्वहूं बन्धु समबाम निपट जानै द्विजमोही। सुनु जैसो मैं

विप्रतथा वरणौं अबतोहीं॥ चापश्रुवाहुति बाण क्रोध ममघोर कृशानू। समिधसेन चतुरङ्ग भूपगण बलिपशुजानू॥ यहि परशु काटि बलिदीनमैं युद्ध यज्ञ बहुकीनभव। भ्रम द्विजन निदरि बोलत तुकस मोरप्रभाव न विदिततव॥

दो० एकचाप दलिदाप बड़ गयो हृदै तवबाढ़ि।
तातेअति अहमिति मनहुँ भयो जीतिजगठाढ़ि॥

राघव वचन कवित्त॥ विप्रदेव बात आपु कहियो विचारिहीय चूकहै हमारि थोरि क्रोधतो अपारहै। कौनहेत करौं मानछूतही सुदृढ़चाप जानै कौन कबको पुरान सो सरारहै॥ भाग्यवन्त कहौं सत्यसुनिये सुभार्गवेश करौं वदिविप्र जोनिरादर तुम्हारहै। तौंतो असवीर कौन दूसरो जहानबीच नावैं हमशीश जाको मानि त्रास भारहै॥ सवैया॥ देवअदेव महीप जितेभटभूरि बलीसमवाधिक होई। जो रणमाहिं प्रचार हमैं सुखमानि लरैलहु जै चह जोई॥ क्षत्रिनको तनुधारि शकै रणनीच स्ववंशकलंकित सोई। वंश प्रशंसन रीतिकहौं रघुवंश डरैंनहिं कालहुकोई॥

दो० विप्रदेव तव वंशकी यह प्रभुता बड़िआहि।
होय अभै भगवंत सो जो जन तुमहिं डराहि॥
परशुराम सुनि रामके वचनगूढ़ मृदुचारु।
भयो प्रकाशित ज्ञानउर मिट्यो मोहमदमारु॥
राम रमापति को धनुष लेहु हाथ निजएहु।
खैंचि चढ़ावहु जाहिते मिटै मोर सन्देहु॥
देतचाप आपै गयो चढ़ि विलोकि भृगुनन्द।
भइ विस्मय मन इनहिं में कहे कटुक वचवृन्द॥
प्रभु प्रभाव तब जानिकै पुलकगात सानन्द।

लागे पुनि अस्तुति करन जोरि पाणि भृगुनन्द ॥

कवित्त ॥ जैति रघुवंश कंज कानन दिनेश वेश दाहन कृशानु घोर दैत्यकुल काननै । जैति सुर धेनु साधु विप्रहितकार जैति काम क्रोध लोभश्वान मोह भ्रम भाननै ॥ शीलगुण सागर उदार चित्त कारुणीक जैति हंसमानसरहीय पञ्चआननै । जैति जैति भाग्यवन्त दास हितकार नित्य धार अवतार हेतहार भूमि भारनै ॥ जैति जै दयाल दीन संतत स्वछन्द चारु गावत पुराण वेद कीरति उदारहै । रूपता अपार वार मार कोटिरूप भद्रनीति धर्मपाल नाम संसृति उधारहै ॥ बानी रचनामैं पटुदानी वीर तेजवन्त भानुवंश भूषणायु पूरणावतार है। भाग्यवन्त शंकर विरञ्चि विष्णु शेष ध्याव लोकन प्रकाश यश रावरो अपारहै॥ शुद्धशांति शक्ति बल वैभव प्रतापवन्त शील तोष सत्यसन्ध नीति के अगरा हौ। धर्मसेतु प्रीतिपाल सज्जन सुखदजाल योगिन अगम्य ध्यान उत्तम उदारहौ ॥ भाग्यवन्त गावत पुराण वेद शास्त्रकीर्त्ति पावत न पार नाथ अद्भुत अपारहौ। कहौं काह एक मुख रावरो पुनीत यश जैति जैति जैतिजै हरण भूमिभारहौ॥जैति जैति रामचन्द दीन बन्धु मोदकंद भंजनाभिमान तूल पापनै कृशानुहौ । शोभधाम सौख्यसिंधु कामधेनु दासनार्थ लोकसिंधु पोत मोहकंदपवमानुहौ॥ भाग्यवन्त व्यापक सकल विश्व नीतिपाल चातुर सुबुद्धिमान ज्ञान के निधानुहौ। हंसवंश सागरायु पूरण सुचंद दानि आनदाब्ज साधु नै प्रकाशकार भानुहौ ॥ सवैया ॥ जैगुण सिंधुकृपा सुख मंदिर सुंदर श्री दशस्यन्दनजाये । मैं अनजान अयोग्य कहे बहुनाथ प्रभाव सुजानिनपाये ॥ बन्धु द्वि धामक्षमा छमिये अपराध कृपाकर वेदन गाये । योंकहि शीशनवाय वनै तपहेतु तुरन्त मुनीश सिधाये ॥

दो० ॥ बरषि सुमन कहि जैतिजै ब्योम मुदित सुरवृन्द ।
पुरनर नारि प्रसन्नअति निरखि राम सुखकन्द ॥
असुर दलन पातक दलन दलन चाप नृपमान ।
दलनगर्व भृगुनन्द बल जयजय जै भगवान ॥
जै शोभा सुखधाम प्रभु जै करुणा गुणऐन ।
जै सुररञ्जन भक्तहित जैति विश्व सुखदैन ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीरामचंद्र परशुरामसंवादेविविधवाग्विलास वर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

दो० ॥ वन्दौं राम कृपालुपद भवसागर दृढ़पोत ।
सुमिरत सब संकट शमन सिद्धि मनोरथ होत ॥
मिथिलापुर आनँदमहा बाजहिं विविधनिशान ।
वृन्द वृन्दमिलि भामिनी करहिं मनोहरगान ॥

तब विदेह मुनिपद शिरनावा । जोरिपाणि मृदुवचन सुनावा ॥
नाथशम्भु धनु भंजेउ रामा । आयसुहोइ करौं स्वइकामा ॥
बोलेमुनि सुनु भूप सुजाना । धनुकर रह्यो ब्याहु जगजाना ॥
गयो सुधनु टूटत है ब्याहू । तदपि मानि ममवच नरनाहू ॥
निजकुल रीति होइ जसिकीजै । पठैदूत कोशलपुर दीजै ॥
सहित बरात भूप दशथानै । सानँद बोलि शीघ्र इतआनै ॥
भलेहिनाथ कहि जनक सचावा । तुरतहि शतानन्द बुलवावा ॥
पत्री दीन्ह मुदित नरनाहू । कह्यो वेगि कोशलपुर जाहू ॥

दो० श्रीदशरथ महराज कर दीन्ह्यौं पत्रीजाय ।
सुनि धावन धाये तुरत हरष न हृदय समाय ॥
बहुरि महाजन बोलिकै दीन्हेउ शासन भूप ।
हाट बाट सुर संदन पुर रचहु वितान अनूप ॥

मुनि निदेश मिथिलेशको बोलि गुनीन उताल ।
दिय नियोग लागेरचन नाय सुविधिपद भाल ।।

रोलाछन्द ।। कञ्चनमै कलरम्भ खम्भ अति सुदर बनाये । हरित मणिनफल पत्र श्रोण मणि फूल सुहाये ।। वेणु हेर मणि हरित सरल सपरण रचि दीन्हे । शोभा अमित अनूप भ्रमत मन परत न चीन्हे ।। सर पितु सदल सँवारि रजत घनतर कल छाये । नागबेलि अलबेलि कनकमय रुचिर बनाये ।। बन्धन तासु बनाय कोरि बांसन पचिलाये । मोतिमाल बहु गुच्छ बीच बीचन लटकाये ।। माणिक मरकत हीर रङ्ग जङ्गाली मनिसो । रचे रङ्ग बहुपद्म शोभ सक कविको भनिसो ।। तिन कमलनपै रचे बिहँग बहु भृंग अमोलैं । पाय समीर प्रसङ्ग भ्रमर गुंजहिं खग बोलैं ।। खम्भन चित्र बिचित्र बिविध देवन गढ़ि काढ़े । मंगल बस्तु अपार सकल लीन्हें कर ठाढ़े ।। सिन्धुर मणिमय चारु बिबिध चौके पुरवाई । कोरि नीलमणि रचे आम्र पल्लव सुखदाई ।। कलित कनकमय बौर श्याम मणि घौरि बनाये । बन्दनवार सु तासु डोरि रेशम गुहिलाये ।। हेम कलश बहु साजि जहां तहँ सुभग पधारे । दीप जाल मणि लाल ठौर ठौरन कलधारे ।।

दो० ।। ध्वज पताक पट चमर कल सोहत जहँ तहँ भूरि ।
जनक सदन शोभा परम रहेउ मोद भरि पूरि ।।
ज्यों शोभा भूपति भवन त्यों पुर घरघर माहि ।
कहि न सकैं श्रुति शेप मैं कहौं कौनविधि ताहि ।।

सवैया ।। दुलही सिय राम जहाँ दुलहा दिउ आनँद कंद बिराज अहै । सुमिरे ज्यहि नाम मिलै अभिराम विना श्रमही फल चारि लहै ।। स्वइ पूरण ब्रह्म सुपूरण शक्ति सुव्यापक विश्व निहार उँहै ।